पी. एण्ड एस. बैंक

राजभाषा अंकुर

दिसंबर 2024

पंजाब एण्ड सिंध बैंक
Punjab & Sind Bank
ਪੰਜਾਬ ਐਂਡ ਸਿੰਧ ਬੈਂਕ

राजभाषा विभाग

प्रधान कार्यालय स्तरीय

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक

बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री स्वरूप कुमार साहा की अध्यक्षता में 07 दिसंबर, 2024 को प्रधान कार्यालय स्तरीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में कार्यपालक निदेशक श्री रवि मेहरा, कार्यपालक निदेशक श्री राजीव सहित अन्य उच्चाधिकारी उपस्थित रहे। बैठक में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर मदवार चर्चा की गई।

इस अवसर पर माननीय अध्यक्ष महोदय के कर कमलों से बैंक की तिमाही हिंदी पत्रिका **‘राजभाषा अंकुर’** तथा ई-पत्रिका **‘राजदीप’** का विमोचन किया गया।

पंजाब एण्ड सिंध बैंक

प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग की हिंदी पत्रिका

राजभाषा अंकुर

(केवल आंतरिक वितरण हेतु)

बैंक हाउस, प्रथम तल, 21, राजेन्द्र प्लेस, नई दिल्ली - 110008

दिसंबर 2024

मुख्य संरक्षक

श्री स्वरूप कुमार साहा
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी

संरक्षक

श्री रवि मेहरा
कार्यपालक निदेशक

श्री राजीव
कार्यपालक निदेशक

मुख्य संपादक

श्री गजराज देवी सिंह ठाकुर
महाप्रबंधक सह मुख्य राजभाषा अधिकारी

संपादक व प्रकाशक

श्री निखिल शर्मा
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

संपादक मंडल

श्री देवेन्द्र कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
श्रीमती भारती, प्रबंधक (राजभाषा)
श्री बिभाष कुमार, प्रबंधक (राजभाषा)
श्री रूप कुमार, राजभाषा अधिकारी

ई-मेल : ho.rajbhasha@psb.co.in
पंजीकरण संख्या : एफ.2 (25) प्रैस.91

'राजभाषा अंकुर' में प्रकाशित सामग्री में दिए गए विचार, संबंधित लेखकों के अपने हैं। पंजाब एण्ड सिंध बैंक का प्रकाशित विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है। सामग्री की मौलिकता एवं कॉपीराइट अधिकारों के प्रति भी लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं।

मुद्रक : जैना ऑफसेट प्रिंटर्स
ए 33/2, साइट-4, साहिबाबाद इंडस्ट्रीयल एरिया
गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश
दूरभाष संख्या : 98112-69844

विषय सूची

क्र. सं.	विवरण	पृष्ठ सं.
1.	संपादक मंडल/विषय-सूची	1
2.	आपकी कलम से	2
3.	संपादकीय	3
4.	भारतीय संस्कृति और राजभाषा हिंदी	4-6
5.	राजभाषा उपलब्धि	7
6.	स्वर्ण भंडारण	8-11
7.	जलवायु परिवर्तन और आर्थिक विकास	12-14
8.	नराकास पुरस्कार	15
9.	हिंदी माह समापन समारोह-2024	16-17
10.	समस्या की जड़	18-20
11.	कार्टून-कोना	21
12.	संसदीय राजभाषा समिति का दिल्ली दौरा	22-23
13.	विभ्रम में विज्ञापन	24-27
14.	काव्य-मंजूषा	28-29
15.	हिंदी कार्यशाला	30-31
16.	भारतीय अर्थव्यवस्था और जलवायु परिवर्तन	32-34
17.	राजभाषा संगोष्ठी	35
18.	ऑडिट का पेंच	36-39
19.	जीवन-चक्र	40-41
20.	राजभाषा हिंदी और फिनटेक	42-44

आपकी कलम से

राजभाषा अंकुर का सितंबर-2024 अंक जिसे "राजभाषा विशेषांक" के रूप में प्रकाशित किया गया है, प्राप्त हुआ। संपादकीय और गृह एवं सहकारिता मंत्री जी के संदेश ने पत्रिका की रूपरेखा तय कर दी है। भाषा उत्सव और राष्ट्रीय अस्मिता, अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन 2024, हिंदी और क्षेत्रीय भाषाएं तथा भारत की राजभाषा - हिंदी का ऐतिहासिक विमर्श इत्यादि लेख अपने-अपने तरीके से बताते हैं कि हमारी भाषा ही हमारी सभ्यता की सच्ची वाहक हैं।

संयुक्त राष्ट्र की विश्व प्रवासी रिपोर्ट 2022 के अनुसार दुनिया भर में सबसे बड़ी प्रवासी आबादी भारतीयों की है और हिंदी विश्व की तीसरी बड़ी बोले जाने वाली भाषा है। काव्य-मंजूषा में कवियों ने अच्छी कविता लिखी है – "कहाँ गई बिटिया" का दर्द और "मां" की ममता अभी भी मन में गूंज रही है। भाषाओं की विविधता, सांस्कृतिक विविधताओं को न केवल सुनिश्चित करती है बल्कि अपने क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान को आकार देती है। पत्रिका की साज-सज्जा व प्रस्तुति बेहतरीन है। नव वर्ष 2025 की शुभकामनाएं।

-राकेश चंद्र नारायण

भूतपूर्व महाप्रबंधक, पीएसबी एवं पीएनबी

आपके प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित तिमाही हिंदी पत्रिका 'राजभाषा अंकुर' का राजभाषा विशेषांक- सितंबर, 2024 प्रेषित करने के लिए मेरी ओर से धन्यवाद स्वीकार करें। इस अंक में विशेष रूप से भारत की राजभाषा हिंदी का एतिहासिक विमर्श, फिनटेक का प्रयोग, हिंदी और क्षेत्रीय भाषाएं तथा बैंकिंग और राजभाषा इत्यादि उत्कृष्ट लेख हैं। साथ ही कहाँ गई बिटिया, जिंदगी तथा माँ निश्चित रूप से प्रेरणादायक है। इस अंक में आपके प्रतिष्ठान एवं राजभाषा गतिविधियां संबंधी संक्षिप्त किंतु अत्यंत महत्वपूर्ण जानकारियों का सचित्र प्रस्तुतिकरण पत्रिका को जीवंतता प्रदान करना है। हिंदी तिमाही पत्रिकाओं का नियमित प्रकाशन और आपके प्रतिष्ठान द्वारा निरंतर नवोन्मेषी गतिविधियों/ कार्यक्रमों का आयोजन आपके प्रतिष्ठान के कार्मिकों की राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

आशा करता हूँ कि इस तरह आपके कुशल नेतृत्व में नई-नई विधाओं के अंक आपके प्रतिष्ठित प्रतिष्ठान द्वारा नियमित रूप से प्रकाशित किए जाते रहेंगे।

- हरीश सिंह चौहान

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (मध्य), भोपाल

'राजभाषा अंकुर' का सितंबर 2024 राजभाषा विशेषांक प्राप्त हुआ। हमेशा की तरह इस ताजा अंक को भी मैंने आद्योपांत पढ़ डाला। मुझे यह बताते हुए गर्व महसूस हो रहा है कि पत्रिका के साथ मेरा संबंध बहुत पुराना, लगभग इसके शैशव काल से है। प्रस्तुत अंक में प्रकाशित पी. षण्मुखम का हिंदी अनुवाद सहित तमिल लेख सराहनीय है। बहरहाल आज देश के विभिन्न संस्थाओं द्वारा प्रकाशित गृह पत्रिकाओं में 'अंकुर' का स्थान निस्संदेह लीक से हट कर तथा अनूठा है। वित्तीय प्रौद्योगिकी से संबंधित अमित मोहन अस्थाना का लेख ज्ञानवर्धक लगा। राजभाषा के हीरक जयंती वर्ष पर आयोजित अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन पर देवेन्द्र कुमार का लेख राजभाषा सम्मेलन की विस्तृत जानकारी देता है। प्रस्तुत अंक में विशेष स्तंभ 'ग्राहक के मुख से', 'ज़रा सोचिए' की अनुपस्थिति निश्चित रूप से खलती है। 'कार्टून कोना' में औरों को भी बढ़ चढ़कर हिस्सा लेना चाहिए। पत्रिका में प्रदर्शित विभिन्न छायाचित्र बैंक की संपूर्ण गतिविधियों तथा उपलब्धियों का अवलोकन तो कराता ही है, साथ ही अतीत के गलियारों में विचरण करने का अवसर भी देता है।

पत्रिका की उत्कृष्टता का श्रेय निस्संदेह संपादक मंडल को जाता है। 'अंकुर' की उत्तरोत्तर प्रगति की कामना करता हूँ।

-प्रदीप कुमार रॉय

सेवानिवृत्त मुख्य प्रबंधक, पंजाब एण्ड सिंध बैंक

संपादकीय

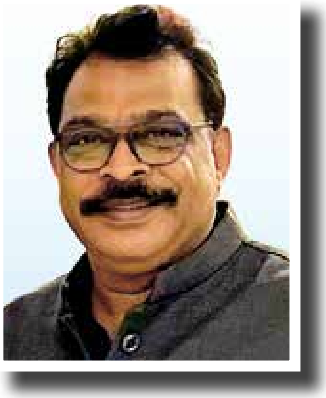

साथियो,

आप सभी को नव वर्ष की शुभकामनाएं। भारत की उन्नति, विकास और समृद्धि में बैंकों की महती भूमिका रहती है और बैंक से जुड़े लोगों को बैंक की लाभप्रदता व विभिन्न शासकीय योजनाओं के क्रियान्वयन में इसी प्रकार के सामानांतर भूमिका का निर्वहन करना होता है। बैंक कार्मिक और हितधारक, देश के विकास को प्रत्यक्ष तौर पर तो प्रभावित नहीं करते लेकिन वे इस विकास के प्रभावकारी घटक हैं। हाल ही में बैंक ने दिसंबर, 2024 को समाप्त तिमाही के लिए अपने वित्तीय परिणाम जारी किए हैं। मुझे इसकी चर्चा करते हुए सुखद अनुभव हो रहा है कि बैंक ने न केवल अपनी लाभप्रदता को बनाए रखा है वरन उसमें वृद्धि भी की है। निःसंदेह इसमें बैंक कार्मिकों, हितधारकों तथा बैंक से प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े लोगों का महत्वपूर्ण योगदान है।

अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों के उपयोग के कारण बैंकिंग जगत में अभूतपूर्व प्रगति हो रही है। प्रौद्योगिकी और दूरसंचार को समाविष्ट करने के लिए बैंक, अपने औद्योगिक परिदृश्य का विस्तार कर रहे हैं। निजी वित्तीय संस्थान भी नवाचार करके बाजार को प्रतिस्पर्धी बना रहे हैं। प्रतिस्पर्धा और तीव्र विकास के इस दौर में बैंक को अपनी स्थिति सुदृढ़ करने के लिए ग्राहक-सेवा, शाखा-विस्तार, संस्कृति, कारोबार-सुगमता तथा तकनीक का समन्वय प्रस्तुत करना होगा। बैंक ने इस दिशा में कार्य करते हुए विगत तिमाही के दौरान क्यूआर कोड, मिस्ड कॉल और वेबसाइट के माध्यम से गृह ऋण तथा कार ऋण खंड के लिए डिजिटल प्रक्रिया आरंभ की है। आवेदकों और लाभार्थियों के लिए व्यापार को आसान बनाने के लिए राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस सर्विसेज लिमिटेड (एनईएसएल) के साथ साझेदारी में ई-बैंक गारंटी (ई-बीजी) सुविधा का आरंभ किया गया है तथा देश के दूरस्थ क्षेत्रों में बैंक, अपनी शाखाओं का विस्तार कर रहा है। इन सब के अतिरिक्त बैंक, आगामी समय में तकनीकी नवाचार के लिए भी प्रयासरत है।

वर्ष, 2025 में देश 75वाँ गणतंत्रोत्सव मना रहा है। हम अपने संविधान निर्माताओं के आभारी हैं जिन्होंने हमें समावेशी तथा विश्व का सबसे बड़ा लिखित संविधान दिया। संविधान की प्रस्तावना के अनुरूप हमें एक संप्रभु, समाजवादी, धर्म-निरपेक्ष और लोकतांत्रिक गणराज्य में रहने का अवसर प्राप्त हुआ है। एक ओर जहाँ संविधान में नागरिकों को न्याय, समानता और स्वतंत्रता का आश्वासन दिया गया है तो वहीं दूसरी ओर इसमें नागरिकों के लिए मौलिक कर्तव्य भी निर्धारित किए गए हैं।

पत्रिका के विगत सितंबर, 2024 अंक के संबंध में अनेक प्रबुद्ध पाठकों से प्रतिक्रियाएं प्राप्त हुई जिनके लिए हम कृतज्ञ हैं। पाठकों द्वारा प्रेषित प्रतिक्रिया से संपादक मंडल को प्रोत्साहन तो मिलता ही है, साथ ही यह पत्रिका के परिवर्धन में भी सहयोग करती है। मुझे विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक आपको अवश्य पसंद आएगा।

(गजराज देवी सिंह ठाकुर)
महाप्रबंधक सह मुख्य राजभाषा अधिकारी

भारतीय संस्कृति और हिंदी

डॉ. वेदप्रकाश गौड़

भाषा, बहती हुई नदी की तरह होती है, अपने आप में सब कुछ समेटे हुए तथा सबकी आशाओं और आकांक्षाओं को पूरा करने में सक्षम। हम उसमें से क्या लेते हैं और क्या लेने में सक्षम है, वह हमारी सीमा हो सकती है, भाषा की नहीं। अतः सभी भाषाएं सशक्त और उनकी अपनी-अपनी विशेषताएं होती है। भारत के प्रत्येक प्रांत में बोले जाने वाली बोलियां और उप-भाषाएं ही हिंदी का आधार है जो भारत की विविध संस्कृति के लिए सेतु का काम करती है तथा हिंदी को सुदृढ़ करती हैं।

मनुष्य, प्रकृति पर विजय पाने के लिए जन्म लेता है न कि उसका अनुसरण करने के लिए। इसलिए प्राचीन काल से ही मनुष्य की खोजी प्रवृत्ति रही है। भारतीय मनीषा सदैव नई खोज का अन्वेषक रहा है। प्राचीन काल से ही वह ब्रह्म, जीव और प्रकृति की खोज में लगा रहा है और इसी संबंध में विभिन्न शास्त्रों, ग्रंथों और महाकाव्यों की रचना की गई जो न केवल भारत में अपितु पूरी दुनिया में जाने जाते हैं। वेद, पुराण, रामायण, गीता को कौन नहीं जानता? भाषा, केवल भावों और विचारों की अभिव्यक्ति मात्र नहीं, यह संस्कृति का संवर्धन एवं संरक्षण भी करती है तथा विभिन्न वर्गों को जोड़ने का कार्य करती है। यह प्रक्रिया भाषा को सतत नया प्रवाह प्रदान करता है। इस प्रकार भाषा महज़ संप्रेषण का माध्यम ही नहीं रह जाती अपितु अपने व्यवहार क्षेत्र के मानवीय चरित्र को भी उजागर करती है। अतः इस प्रकार भाषा का सर्वाधिक महत्व और भारतीय संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में तो हिंदी भाषा का स्थान और विशिष्ट हो जाता है। भारतीय मनीषा, भाषा के वरदान के लिए ही ईश्वर का स्तवन करते हुए कहता है कि "मूकं करोति वाचालं।"

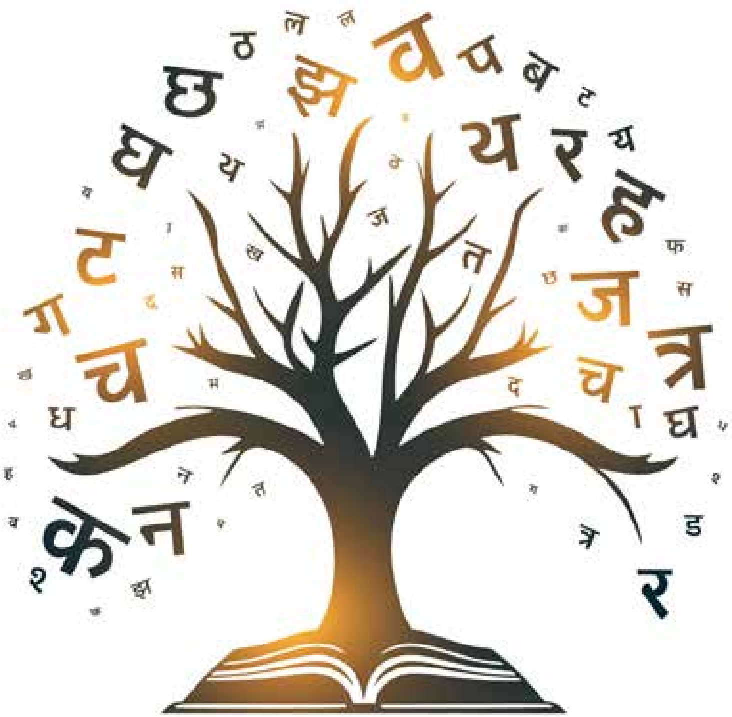

मूक से वाचाल होने का तात्पर्य मनुष्य का भाषा से समृद्ध होना ही है। भाषा के बिना मनुष्य, पशु के समान होता है इसलिए तो कहा गया है

"साहित्य संगीत कला विहीनः।
साक्षात पशुः पुच्छ विषाण हीनः ।।
तृणं अपि खाद्यान्ति जीवमानः।
पशुनाम परम् भाग देयं इदं।।"

इसलिए सीखने की प्रक्रिया में शिशु सर्वप्रथम भाषा सीखता है। भारत और भारत से बाहर विश्व के अनेक देशों में भारतीय परिवारों में शिशु हिंदी सीखकर संसार का बोध करता है। विधाता की दृष्टि वैविध्यपूर्ण

है, प्रकृति सर्वत्र भिन्न है इसलिए पृथ्वी पर समाज, भाषा आदि भी अलग-अलग है लेकिन संपूर्ण जगत में सर्वत्र एक तार बौद्धिक चेतना के दिग्दर्शन होते हैं, उसी प्रकार संपूर्ण भारतीय संस्कृति और भाषा जगत में भी एक सूत्रता विद्यमान है इसलिए हमारे ऋषि-मुनियों ने कहा है कि यह धरा विविध भाषा बोलने वाले, विभिन्न धर्मों को अपनाने वाले मनुष्यों से परिपूर्ण है और उन सब में पारस्परिक संपर्क के लिए भाषा का महत्व असंदिग्ध है, समसामयिक परिदृश्य में भाषा का महत्व और भी बढ़ जाता है।

जिस प्रकार भारत की संस्कृति विश्व प्रसिद्ध है, उसी प्रकार हिंदी, गौरवशाली अतीत और अनंत भविष्य की संवाहक है तथा हिंदी और संस्कृति एक दूसरे के पूरक हैं। संसार में शक्ति का आधार संगठन होता है और हमारे वैदिक साहित्य में देवी को शक्ति का पर्याय माना गया है तथा जिस प्रकार देवी की उत्पत्ति विभिन्न देवताओं के तेज पुंज से हुई है, उसी प्रकार हिंदी की उत्पत्ति भी विभिन्न भारतीय भाषाओं और बोलियां से हुई है।

प्रत्येक राष्ट्र के पास अपना चिंतन होता है, अपनी भावनाएं होती है जिसे वह अपनी भाषा में व्यक्त करता है। भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं होती बल्कि उससे बोलने वालों की संस्कृति और संस्कार भी जुड़े होते हैं। भाषा जहां अपनी विरासत से उपजी हुई है, वहीं इस विरासत को आने वाली पीढ़ी तक भी पहुंचाती है। इसलिए भाषा का प्रश्न केवल अभिव्यक्ति के माध्यम का प्रश्न नहीं है बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक विरासत और हम लोगों के संस्कारों से भी जुड़ा हुआ है।

देश की आत्मा को समझने के लिए उसकी भाषा को समझना चाहिए। आधुनिक भारत की आत्मा को समझने के लिए हमें हिंदी भाषा और उसमें प्रकाशित होने वाले साहित्य को पढ़ना चाहिए। हिंदी, वर्तमान भारत की समृद्धतम भाषा है, ऐसी भाषा जो आधुनिक बहुभाषी राष्ट्र की सभी आवश्यकताओं को संतोषजनक ढंग से पूरा कर सकती है। दुनिया में शायद ही ऐसी कोई विकसित साहित्यिक भाषा हो जो सरलता, अभिव्यक्ति और क्षमता में हिंदी की बराबरी कर सके। हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जिसमें सभी भारतीय भाषाओं का समन्वय है। यदि भारतीय कला, संस्कृति और राजनीति में एक होना चाहते हैं तो उन्हें हिंदी को अपनाना होगा।

भारतवर्ष की केंद्रीय भाषा हिंदी है, लगभग आधा भारतवर्ष इसे अपनी साहित्यिक भाषा मानता है। साहित्यिक भाषा अर्थात उसके हृदय और मस्तिष्क की भूख मिटाने वाली, करोड़ों की आशा, आकांक्षा, अनुराग-विराग, रुदन-हास्य की भाषा। उसमें साहित्य लिखने का मतलब है, करोड़ों लोगों के मानसिक स्तर को ऊंचा करना, करोड़ों मनुष्यों को मनुष्य के सुख-दुख के प्रति संवेदनशील बनाना, करोड़ों को अज्ञान, मोह और कुसंस्कार से मुक्त करना।

अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञानां।
तां मा देवा व्यदधुः पुरुत्रा भूरिस्थात्रां सूर्यावेशान्तीम्।।

अथर्ववेद की एक श्रुति के अनुसार "जो मेरे अन्न, पान एवं मेरी वाणी की हिंसा करना चाहता है, उस पर स्वयं इंद्र और अग्नि अपनी ज्वालाओं और वज्र से परिपूर्ण प्रहार एवं विध्वंस करते हैं।

किसी भी देश के लिए भाषा ही राष्ट्र, साहित्य और संस्कृति का निर्माण करती है, आदर्शों की सृष्टि करती है। भाषा, मानव समाज में अभिव्यक्ति का सरलतम साधन है। भाषा ही संस्कृति की अभिव्यक्ति करती है, वह समाज की पहचान होती है, वह जनता के सुख-दुख को प्रकट करती है। भाषा अपने समाज को जोड़ती है, धारण करती है। यह हर प्रकार के जीवन स्तर को अभिव्यक्त करती है। भाषा, समाज के व्यक्तित्व से अभिन्न है, आदमी सपने भी मातृभाषा में ही देखता है।

फ्रेंच लोग अपनी भाषा और संस्कृति पर बहुत गर्व करते हैं। वे इसके प्रचार-प्रसार के लिए कुछ भी करने को तैयार रहते हैं। उनके लिए राष्ट्र-प्रेम और भाषा-प्रेम में कोई अंतर नहीं है। फ्रेंच लोग, उन लोगों से कोई संबंध नहीं रखते जिनकी कोई भाषा न हो। वह, उन्हें बर्बर कहते हैं, उनसे बात तक नहीं करना चाहते। हम सबको भी प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि हम राष्ट्रभाषा, मातृभाषा को महत्व देंगे, मातृभाषा का प्रयोग गर्व से करेंगे तो ही राष्ट्रभक्त कहलाएंगे।

शहीद भगत सिंह ने वर्ष 1924 में 'सशर्त' के लेख में स्पष्ट लिखा था कि यदि हम विभिन्न भाषा-भाषी प्रदेशों के तमिल, बंगाली, मराठी, गुजराती या पंजाबी भाई एकत्रित हों तो क्या सात समंदर पार भी विदेशी भाषा में ही बात करेंगे? कदापि नहीं! अपने देश की संपर्क/राष्ट्रभाषा में ही बात करेंगे।

देवकीनंदन खत्री के उपन्यास 'चंद्रकांता' की इतनी लोकप्रियता बढ़ी कि लोगों ने इसे पढ़ने के लिए हिंदी सीखी। इसी प्रकार भारतेंदु

हरिश्चंद्र ने नाटकों, निबंधों और व्यंग्य आदि के माध्यम से समाज में जन जागरण किया। हिंदी के अलावा उन्होंने ब्रजभाषा में भी काफी कुछ लिखा। इसी प्रकार महावीर प्रसाद द्विवेदी जी की 'सरस्वती' पत्रिका ने भी हिंदी को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्रगतिशील और मानवतावादी दृष्टिकोण से मुंशी प्रेमचंद की कहानियाँ और उपन्यासों ने भारतीय चेतना को सर्वाधिक रूप से प्रभावित किया। कफन और पूस की रात उनकी बहुचर्चित कहानियाँ है।

भाषा, मात्र विचारों की अभिव्यक्ति ही नहीं अपितु जीवन शैली का निर्णायक भी है। किसी भाषा को अपनाने का अर्थ है, उसकी परंपरा, सोच और संस्कृति को अपनाना। भाषा की परतंत्रता उतनी ही दुर्भाग्यपूर्ण होती है जितनी देश की परतंत्रता। हिंदी किसी एक भाषा या बोली का नाम नहीं है अपितु एक सामाजिक भाषा परंपरा की संज्ञा है जिसका आकार-प्रकार हिंदी की विभिन्न उप-भाषाओं और बोलियां को ताने-बाने से निर्मित हुआ है। इस प्रकार हिंदी भाषा, अपनी बोलियां और उप-भाषाओं का समष्टिरूप है। हिंदी की विभिन्न धाराओं यथा अवधी, भोजपुरी, ब्रज, मैथिली, बुंदेली, मारवाड़ी, खड़ी बोली और हरियाणवी ने मिलकर हिंदी की इस सुरसरिता को व्यापक रूप दिया है। इस प्रकार हिंदी की उप-भाषाएं और बोलियां ही इसकी प्राण वायु का काम करती है। वहीं से यह अपने मुहावरे और लोकोक्तियां ग्रहण करती है, उनकी समृद्धि से ही हिंदी की समृद्धि होती है।

हिंदी, केवल एक भाषा का नाम नहीं है। हिंदी, खेत से गाँव लौटते बैलों की घंटी का स्वर है जिसे सुनकर धनिया, घर की देहरी पर आ जाती है और अपने सामने होरी को देखकर सब कुछ पा लेने की गरिमा से झुक जाती है। हिंदी, तुलसी का वह बिरवा है जिसके पत्ते-पत्ते में आशीर्वचन के स्वर मुखरित होते रहते हैं। हिंदी, बेलपत्र की वह टहनी है जिसे अपने इष्ट देव के चरणों में समर्पित करके हम श्रद्धा और भक्ति के मार्ग पर आगे बढ़ने का प्रयास करते हैं। हिंदी, पालने में झूलते राम की छवि है जिसे देखकर कौशल्या का आंचल दूध से भर जाता है। हिंदी, कदंब के पेड़ से गुंजित बांसुरी की वह पवन धुन है जिसे सुनते ही गोपियाँ अपने घर का काम-काज छोड़कर उस कदंब के पेड़ की ओर दौड़ती चली जाती है। हिंदी, शबरी की तपस्या है, सुहाग की बिंदी है, आम्रपाली की थिरकन और चित्रलेखा की प्रतूलिका है। हिंदी, मीराबाई की लगन, तुकाराम का भजन और रश्मि का गान है। हिंदी सत्य, शिव और सुंदर है। इसमें

तुलसी की तरुणाई है और सूर्य की गहराई है। इसमें विद्यापति की पुरवाई और चंदरबरदाई की टंकार तथा सीता की दिव्यता है। इसमें उद्धव का उपदेश और गोपियों का अट्टाहस है, इसमें पद्मावती का यशोगान और उर्वशी की आध्यात्मिक प्रेरणा प्रेमानुभूति है। कृष्ण की माखन लीला है, मानस की सीता है और उर्मिला का त्याग है।

इस प्रकार यह कहना उचित ही है कि हिंदी, भारतीय संस्कृति का पर्याय है। इसमें सभी भारतीय भाषाएं भी लोक संस्कृतियों को प्रकट करती हैं जिसका अनुवाद सतत हिंदी में होता रहा है। विराट भारतीय संस्कृति, हिंदी के प्राचीन ग्रंथो यथा रामायण, महाभारत, भगवद्-गीता, वेद, पुराण आदि के माध्यम से अभिव्यक्त हुई है और वह पूरी दुनिया का दिग्दर्शन कर भारत के गौरव को बढ़ा रही है।

-पूर्व निदेशक, सीएसओएलएस, एमएचए
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार
अध्यक्ष : संस्कृति शिक्षा राजभाषा संस्थान

राजभाषा उपलब्धि

दिल्ली बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा बैंक के प्रधान कार्यालय को वित्तीय वर्ष 2023-24 में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए द्वितीय पुरस्कार तथा बैंक की हिंदी तिमाही पत्रिका "राजभाषा अंकुर" को गृह-पत्रिका श्रेणी के अंतर्गत तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया। 24 दिसंबर, 2024 को आयोजित नराकास की छमाही बैठक में उक्त पुरस्कार श्रीमती अंशुली आर्या, सचिव (राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय) तथा श्री अतुल कुमार गोयल, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी (पंजाब नैशनल बैंक) के कर कमलों से श्री अवधेश नरायन सिंह, उप महाप्रबंधक और श्री निखिल शर्मा, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) ने प्राप्त किया।

कैलेंडर वर्ष 2024 के दौरान नराकास के तत्वावधान में सदस्य कार्यालयों द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में बैंक को कुल 19 पुरस्कार प्राप्त हुए।

बिभाष कुमार

स्वर्ण भंडारण

हाल के वर्षों में भारतीय रिज़र्व बैंक ने अपना स्वर्ण भंडारण बढ़ाते हुए 850 टन से ज्यादा कर दिया है। पिछले 10 तिमाहियों में (अप्रैल 2022 से सितंबर 2024 के बीच) रिजर्व बैंक ने सोने की खरीद में तेज़ी दिखाते हुए अपने भंडार में करीब 100 टन सोना जोड़ा है। वैश्विक स्तर पर देखा जाए तो वर्ष 2024 में दुनिया के सबसे बड़े स्वर्ण खरीद व भंडारण में सबसे बड़ी हिस्सेदारी केंद्रीय बैंकों की रही है। साथ ही उपभोक्ता मांग में वृद्धि और भू-राजनीतिक अनिश्चितताओं के बीच सुरक्षित-संपत्तियों में लोगों की बढ़ती रुचि के कारण सोने की कीमत में लगभग 20% की वृद्धि हुई है। कहने का अभिप्राय यह है कि स्वर्ण भंडारण केंद्रीय बैंकों व आम लोगों के बीच एक सुरक्षित निवेश के रूप में रहा है।

देखा जाए तो 18वीं शताब्दी के प्रारंभ से लेकर और 19वी शताब्दी के 7वें दशक तक वैश्विक स्तर पर अपनाए गए स्वर्ण मानक के कारण लगभग सभी देश अपनी मुद्रा और सोने की एक निश्चित मात्रा के बीच एक निश्चित विनिमय दर निर्धारित करके अपनी कागजी मुद्रा के मूल्य को सोने से जोड़ते थे। हालांकि, आधिकारिक तौर पर 1970 के दशक में इस प्रथा को छोड़ दिया और अब दुनिया भर के केंद्रीय बैंक अधिकांश सोने को भंडार के रूप में जमा करते हैं।

पिछली शताब्दियों में जब मुद्रा दरें सोने की कीमत से जुड़ी हुई थीं, तब सोना अंतरराष्ट्रीय मौद्रिक प्रणाली में केंद्रीय भूमिका निभाती थी। वर्ष 1973 में स्थिर मुद्रा प्रणाली समाप्त हो गई जिससे सोने की भूमिका कम हो गई। हालाँकि, सोना एक महत्वपूर्ण आरक्षित परिसंपत्ति बना हुआ है। केंद्रीय बैंकों के अतिरिक्त अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं द्वारा भी स्वर्ण भंडारण पर निरंतर जोर दिया जाता रहा है। आज देखा जाए तो दुनिया के सबसे बड़े आधिकारिक सोने के धारकों/ भंडार(को) में से अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष एक है।

आईएमएफ के अनुसार, वैश्विक केंद्रीय बैंकों ने हाल ही (अक्टूबर 2024) में आधिकारिक स्वर्ण भंडारण में 37 टन की शुद्ध वृद्धि दर्ज की है जो महीने-दर-महीने 206% की वृद्धि दर्शाता है और जनवरी 2024 के बाद से सबसे अधिक मासिक वृद्धि है। केंद्रीय बैंकों द्वारा वर्ष 2024 की रिकॉर्ड-तोड़ स्वर्ण भंडारण के शुरुआत के बाद दूसरी तिमाही में वैश्विक केंद्रीय बैंकों द्वारा सोने की खरीद में थोड़ी मंदी आई परंतु उसके बाद भी 483 मीट्रिक टन सोने की शुद्ध खरीद हुई। कहने का तात्पर्य यह है कि केंद्रीय बैंकों द्वारा स्वर्ण भंडारण की प्रक्रिया कोई नई बात नहीं है। यह एक सतत प्रक्रिया है। अपने देश

की मौद्रिक नीति और वित्तीय स्थिरता के मद्देनजर नजर प्रायः केंद्रीय बैंकों द्वारा स्वर्ण भंडारण की प्रक्रिया को तेज कर देती है।

केंद्रीय बैंकों के लिए सोने की प्राथमिक भूमिकाओं में से एक अपने आरक्षित निधि भंडार (डॉलर, स्वर्ण आदि) में विविधता लाना है। ज्ञात हो कि केंद्रीय बैंक अपने राष्ट्रों की मुद्राओं के स्थिरता लिए ज़िम्मेदार हैं लेकिन अंतर्निहित अर्थव्यवस्था की कथित मज़बूती या कमज़ोरी के आधार पर इनका मूल्य में उतार-चढ़ाव के लिए वैश्विक कारण भी समान रूप से जिम्मेदार रहता है। इसलिए आर्थिक उथल-पुथल को रोकने के लिए मुद्रा आपूर्ति में स्वर्ण भंडारण में वृद्धि आवश्यक हो जाती है।

सोना एक सीमित भौतिक वस्तु है जिसकी आपूर्ति में आसानी से वृद्धि नहीं की जा सकती। इस तरह, यह मुद्रास्फीति के विरुद्ध एक प्राकृतिक बचाव है। चूंकि सोने के विरुद्ध किसी प्रकार के क्रेडिट या प्रतिपक्ष में जोखिम नहीं होता है इसलिए यह किसी देश में और सभी आर्थिक वातावरण में विश्वास के स्रोत के रूप में कार्य करता है जो इसे सरकारी बॉन्ड के साथ-साथ दुनिया भर में सबसे महत्वपूर्ण आरक्षित परिसंपत्तियों में से एक बनाता है।

वर्ष 1991 में आए आर्थिक संकट के समय भुगतान असंतुलन के समय भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा जनवरी और जुलाई 1991 के बीच सॉवरेन डिफॉल्ट को रोकने तथा एक्जिम कवर हेतु पर्याप्त धन जुटाने की दृष्टि से आपातकालीन विदेशी मुद्रा जुटाने के लिए करीब 87 टन से अधिक गिरवी रखना पड़ा था क्योंकि देश में विदेशी मुद्रा भंडार केवल 600 मिलियन डॉलर था। उस समय भुगतान असंतुलन के गंभीर आर्थिक संकट से बचाने में स्वर्ण भंडारण ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

वैश्विक स्तर पर देखा जाए तो केंद्रीय बैंक द्वारा सामान्य तौर पर अपने निवेश योजना के अंतर्गत एक अन्य प्रमुख आरक्षित परिसंपत्ति जिसे हम सभी वैश्विक मुद्रा (अमेरिकी डॉलर) के रूप में भी देखते है, में निवेश करता है। डॉलर और स्वर्ण निवेश का तुलनात्मक अध्ययन करने पर हम पाते हैं कि सोने का डॉलर के उतार-चढ़ाव के समय विपरीत ट्रेंड देखते है। जब डॉलर का मूल्य गिरता है तो सोना आम तौर पर बढ़ता है जिससे केंद्रीय बैंक, बाजार में उतार-चढ़ाव के समय अपने भंडार की रक्षा करने में सक्षम होते हैं। केंद्रीय बैंकों द्वारा स्वर्ण भंडारण के प्रति आकर्षण हेतु यह एक अतिरिक्त झुकाव रहा है।

पिछले कुछ दशकों के स्वर्ण भंडारण के आंकड़े देखें तो हम पाते है कि केंद्रीय बैंकों की प्रोफ़ाइल बदल रही है। पारंपरिक आर्थिक महाशक्तियाँ जैसे अमेरिका, जर्मनी, फ्रांस और इटली अब और सोना नहीं खरीद रहे हैं बल्कि उनके पास पहले से मौजूद पर्याप्त होल्डिंग्स को बनाए रखने का प्रयास कर रहे हैं। अमेरिका, जर्मनी जैसे देशों के केंद्रीय बैंक की तुलना में भारत, तुर्की सदृश विकसित अर्थव्यवस्था वाले देशों ने स्वर्ण भंडारण पर विशेष जोर देना शुरू किया है। वैश्विक स्वर्ण भंडारण की रैंक देखेंगे तो हमारे समक्ष निम्नलिखित आंकड़े आते हैं :

स्वर्ण भंडारण (टन) में उल्लेखित है

1) संयुक्त राज्य अमेरिका- 8,133
2) जर्मनी -3,352
3) इटली -2,452
4) फ्रांस -2,437
5) रूसी संघ -2,336
6) चीन -2,264
7) जापान -846
8) भारत -841

ज्ञात हो कि निवेशकों और आभूषण उपभोक्ताओं के अलावा केंद्रीय बैंक सोने की मांग का एक प्रमुख स्रोत हैं। वर्ष 2022 में, कोविड-19 के दौर में केंद्रीय बैंकों ने 1967 के बाद से सबसे तेज़ गति से सोना खरीदा। यूं देखा जाए तो एक अनुमान के अनुसार अब तक निकाले गए सभी सोने का लगभग पाँचवां हिस्सा केंद्रीय बैंकों के पास है। यह विचार हम सभी के मन में अक्सर आता है कि केंद्रीय बैंक सोना क्यों खरीदते हैं? सोना देशों के वित्तीय भंडार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

केंद्रीय बैंक, सोना क्यों खरीदकर रखते हैं इसके तीन मुख्य कारण इस प्रकार दिए जा सकते है :

1) **विदेशी मुद्रा भंडार को संतुलित करना** : सबसे पहले सोने को मूल्य का एक स्थिर और विश्वसनीय भंडार माना जाता है। सोना धारण करके, देश अपनी आर्थिक स्थिरता में विश्वास पैदा कर सकते हैं, खासकर वित्तीय अनिश्चितता के दौरान। इसके अतिरिक्त, सोने ने एतिहासिक रूप से किसी देश की मुद्रा के मूल्य को सहारा देने में भूमिका निभाई है। जबकि स्वर्ण मानक का अब व्यापक रूप से उपयोग नहीं किया जाता है फिर भी

कुछ देश मुद्रा स्थिरता बनाए रखने के साधन के रूप में स्वर्ण भंडार को देखते हैं। केंद्रीय बैंकों ने मुद्रा होल्डिंग्स से जोखिम को प्रबंधित करने और आर्थिक उथल-पुथल के दौरान स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए अपने भंडार के हिस्से के रूप में लंबे समय तक सोना रखा है।

2) **मुद्रास्फीति के कारण मुद्राओं के गिरने के विरुद्ध बचाव :** मुद्रास्फीति के कारण मुद्राओं (मुख्य रूप से यू.एस. डॉलर) की घटती क्रय शक्ति के विरुद्ध सोना बचाव प्रदान करता है।

3) **पोर्टफोलियो में विविधता लाना :** यह देखने में आया है कि सोने का अमेरिकी डॉलर के साथ विपरीत संबंध है। जब डॉलर का मूल्य गिरता है तो सोने की कीमतें अक्सर बढ़ती हैं, जो केंद्रीय बैंकों को अस्थिरता से बचाती हैं। इसके मद्देनजर केंद्रीय बैंक अपने पोर्टफोलियो में विविधता लाने हेतु इसकी खरीद करता है। अपने पोर्टफोलियो में विविधीकरण इसका एक और महत्वपूर्ण कारण है। जैसा कि हमें ज्ञात है कि सोना एक मूर्त संपत्ति है, इसे अपने भंडार में रखकर, देश अपने समग्र पोर्टफोलियो में विविधता ला सकते हैं। यह विविधीकरण अन्य परिसंपत्तियों के मूल्य में उतार-चढ़ाव से जुड़े जोखिमों को कम करने में मदद करता है।

इन सबके साथ ही मजबूत आर्थिक विकास के कारण सोने में निवेश आकर्षित करती है। इसके अच्छे रिटर्न ने इसे निवेश के रूप में और अधिक आकर्षक बना दिया। वर्ष 1997 के एशियाई वित्तीय संकट और फिर बाद में, 2007-08 के वित्तीय संकट के बाद सोने के प्रति केंद्रीय बैंक का रवैया बदलना शुरू हुआ। 2010 से, केंद्रीय बैंक वार्षिक आधार पर सोने के शुद्ध खरीदार रहे हैं। स्वर्ण भंडार अंतरराष्ट्रीय व्यापार और वित्त में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। किसी देश की ऋण-योग्यता को बढ़ाते हैं तथा वैश्विक आर्थिक प्रणाली में उसकी स्थिति को प्रभावित करते हैं। सदियों से सोना राष्ट्रों के वित्तीय भंडार का एक अनिवार्य घटक रहा है और इसकी अपील कम होने का कोई संकेत नहीं दिखा रही है।

केंद्रीय बैंक इस साल एक बार फिर सोने के शुद्ध खरीदार बनने वाले हैं। वास्तव में, केंद्रीय बैंकों के पास अब 35,000 मीट्रिक टन से अधिक स्वर्ण भंडारण है जो अब तक खनन किए गए सभी सोने का लगभग पाँचवां हिस्सा है लेकिन सोने के बारे में ऐसा क्या है जिसने इसे इतने लंबे समय तक इतनी महत्वपूर्ण संपत्ति बना दिया है। इसके गहराई में जाएंगे तो हम पाते है कि अंतरराष्ट्रीय व्यापार और वित्त

जगत में स्वर्ण भंडार देश की आर्थिक स्थिति के संकेतक के रूप में देखा जाता है। कुछ देश व्यापार असंतुलन को निपटाने या ऋण आदि के लिए संपार्श्विक के रूप में सोने का उपयोग करते हैं। सोने के भंडार की मौजूदगी किसी देश की साख को बढ़ा सकती है और वैश्विक आर्थिक प्रणाली में उसकी स्थिति को प्रभावित कर सकती है। इसके अलावा, सोना संकट के दौरान बचाव का काम करता है। आर्थिक मंदी या भू-राजनीतिक अनिश्चितताओं के दौरान इसका मूल्य अक्सर बढ़ जाता है जो मुद्रास्फीति और मुद्रा अवमूल्यन से सुरक्षा प्रदान करता है।

केंद्रीय बैंक अर्थात भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा अपने स्वर्ण भंडारण में वृद्धि से अर्थव्यवस्था पर जहां दूरगामी सकारात्मक परिणाम देखने को मिलते है तो वही तात्कालिक दृष्टि से इसके कारण व्यापार असंतुलन का खतरा भी बना रहता है। भारत के परिपेक्ष्य से वैश्विक व्यापार के आंकड़ों का अवलोकन करने से हम पाते है कि नवंबर, 2024 में भारत का स्वर्ण आयात 14.86 बिलियन डॉलर हो गया है। चालू वित्त वर्ष के पहले आठ महीनों के दौरान आयातित सोने का कुल मूल्य 44 बिलियन डॉलर है जिसके कारण देश का व्यापार घाटा जहाँ नवंबर, 2023 में 21.3 बिलियन डॉलर था, नवंबर, 2024 तक आते-आते रिकॉर्ड 37.8 बिलियन डॉलर पर पहुंच गया।

व्यापार असंतुलन के लिए केंद्रीय बैंक केवल अपने स्वर्ण भंडारण हेतु स्वर्ण आयात को जिम्मेदार नहीं ठहरा सकते है परंतु आयात-निर्यात के अकड़ों की समीक्षा करने से हम इस निष्कर्ष तक पहुंचते है कि देश में स्वर्ण आयात इसका सबसे महत्वपूर्ण घटक है। नवंबर, 2024 में देश से वस्तुओं का निर्यात 4.85% घटकर 32.11 बिलियन

डॉलर रह गया जो कि एक वर्ष पूर्व इसी अवधि के दौरान 33.75 बिलियन डॉलर था। साथ ही इसी अवधि के दौरान आयात 27% बढ़कर 69.95 बिलियन डॉलर हो गया जबकि नवंबर, 2023 में यह 55.06 बिलियन डॉलर था जिसका मुख्य कारण रिकॉर्ड सोने का आयात है। इस तथ्य को प्रमाणित करने हेतु हम पिछले एक वर्ष के दौरान स्वर्ण के आयात में आए अप्रत्याशित वृद्धि को इस आकड़ें से समझ सकते हैं।

नवंबर, 2024 में सोने का आयात 332% बढ़कर 14.86 बिलियन डॉलर हो गया जबकि पिछले वर्ष इसी अवधि में यह 3.44 बिलियन डॉलर मात्र था। ज्ञात रहे कि इस दौरान देश से रत्न और आभूषणों के निर्यात में गिरावट दर्ज की गई है। इससे पता चलता है कि सोने का आयात मुख्य रूप से घरेलू खपत के लिए था न कि रत्न और आभूषणों के निर्यात हेतु मूल्य संवर्धन के लिए। भारतीय रिज़र्व बैंक स्वर्ण भंडारण नीति के कारण इस दौरान स्वर्ण के कुल घरेलू खपत की तुलना में भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा खरीद की हिस्सेदारी सर्वोच्च स्थान पर रही है।

व्यापार असंतुलन के कारण वित्तीय घाटा बढ़ना चिंता का विषय अवश्य है परंतु देश के आर्थिक विकास दर और विदेशी मुद्रा भंडार की स्थिति के मद्देनजर वर्ष 1991 के भुगतान असंतुलन के बाद उत्पन्न हालात जैसी स्थिति से देश में नहीं आने वाली है क्योंकि नवंबर 2024 में देश का विदेशी मुद्रा भंडार लगभग 650 बिलियन डॉलर के आस-पास था जिसके कारण भुगतान असंतुलन के बाद उत्पन्न स्थिति (वर्ष 1991) के दूर-दूर तक आसार नहीं है। आर्थिक महकमा में व्यापार असंतुलन की बढ़ती स्थिति को गंभीर माना जाता है परंतु भयावह नहीं है। भारतीय विदेशी मुद्रा भंडारण व प्रबंधन हेतु निम्नलिखित महत्वपूर्ण आर्थिक कारक हो सकते हैं :

- **विकास और स्थिरता :** भारत जैसे विकासशील अर्थव्यवस्था हेतु विदेशी मुद्रा भंडार का बढ़ना शुभ संकेत माना जाएगा जिससे विदेशी निवेशक (एफडीआई, एफएफआई) देश में निवेश करने हेतु रुचि दिखाएंगे। इसके साथ-साथ आर्थिक स्थिरता निवेशकों के बाहर निकलने में कमी ला सकती है जिससे विदेशी मुद्रा भंडार में वृद्धि होगी जिससे आर्थिक स्थिरता व सतत विकास में सहायता मिलती है।
- **व्यापार संतुलन :** धनात्मक व्यापार संतुलन (आयात से अधिक निर्यात) विदेशी मुद्रा भंडार के संचय को बढ़ावा देता है। एक नकारात्मक व्यापार संतुलन विदेशी मुद्रा भंडार को कम करता है। एक साथ विदेशी मुद्रा भंडार में कमी के चलते कई बार (स्थानीय मुद्रा) रुपए में गिरावट अथवा टूट देखने को मिलती है जिसके कारण व्यापार संतुलन भी बढ़ने का खतरा राहता है। साथ ही अर्थव्यवस्था पर भी इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।
- **मुद्रास्फीति नियंत्रण :** केंद्रीय बैंक, मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने के लिए विदेशी मुद्रा खरीद या बेचते है जिससे विदेशी मुद्रा भंडार का स्तर प्रभावित होता है। यह किसी देश के केंद्रीय बैंक व सरकार का रणनीतिक निर्णय होता है।

विशेषज्ञों का अनुमान है कि स्वर्ण भंडारण एक उपकरण है जिसका उपयोग आरबीआई मुद्रास्फीति के जोखिमों से बचाव के लिए करता है क्योंकि सोना मुद्रास्फीति के खिलाफ बचाव के रूप में यह कार्य कर सकता है। जब मुद्राओं की क्रय शक्ति कम हो जाती है तो मूल्य में वृद्धि या उसे बनाए रखता है। इसका एक अन्य उपयोग यह है कि सोने का भंडार रुपये के अवमूल्यन से सुरक्षा करता हैं और आर्थिक अनिश्चितताओं के बीच राष्ट्रीय संपत्ति को संरक्षित करता हैं।

पिछली शताब्दी के सबसे विनाशक महामारी "कोरोना वायरस महामारी" से उत्पन्न होने वाले नए जोखिमों आदि के प्रबंधन ने केंद्रीय बैंक के इस दिशा में निर्णय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। साथ ही सरकारी ऋणों या मुद्रास्फीति की चिंताओं में उछाल ने सुरक्षित-संपत्ति और मूल्य के भंडार के रूप में सोने के महत्व को और बढ़ा दिया है। इसलिए पिछले कुछ वर्षों में केंद्रीय बैंकों द्वारा सोना खरीदने का मूल स्रोत बदल गया है लेकिन इस परिसंपत्ति को रखने के कारणों में कोई खास बदलाव नहीं आया है और आने वाले शताब्दी में भी इसमें खास बदलाव नहीं आएगा। केंद्रीय बैंकों की स्वर्ण भंडारण के प्रति रुझान कम होने वाला नहीं है।

उपरोक्त के मद्देनज़र भारतीय रिज़र्व बैंक की स्वर्ण भंडारण की नीति देश के बढ़ते आर्थिक शक्ति को संवर्धित और सशक्त करने की दृष्टि से महत्वपूर्ण रणनीतिक निर्णय है। अल्प अवधि हेतु इसका प्रभाव भारतीय अर्थववस्था, व्यापार असंतुलन और मुद्रा में गिरावट के रूप में देखा जा सकता है परंतु इसके दूरगामी परिणाम देश के लिए निर्णायक होंगे।

- प्रबंधक (राजभाषा)
प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग

जलवायु परिवर्तन और आर्थिक विकास

डॉ. प्रकाश प्रसाद

प्रकृति का क्रंदन सुनो, धरा पुकारे आज,
जलवायु की पीड़ा में, बदल रहा हर राज।
पेड़ों की छाँव घटती, सूखे की है मार,
अगर न चेते हम तो, मिटेगा जीवन सार।

यह कविता जलवायु परिवर्तन को संबोधित करने की तात्कालिकता और भारत की अर्थव्यवस्था पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को दर्शाती है। भारत, एक विशाल और विविधता से भरा हुआ देश, वैश्विक स्तर पर सबसे तेजी से बढ़ती हुई अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। हालांकि, जिस गति से यह विकास कर रहा है, उसी गति से एक अन्य गंभीर समस्या इसके सामने खड़ी हो रही है और वह है जलवायु परिवर्तन। भारतीय अर्थव्यवस्था का हर क्षेत्र, चाहे वह कृषि हो, बुनियादी ढांचा हो, स्वास्थ्य हो या फिर पर्यटन, जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से गहरा प्रभावित हो रहा है। देश की आर्थिक संरचना को दीर्घकालिक रूप से बनाए रखने और उसे सशक्त करने के लिए जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न होने वाली चुनौतियों का समाधान अत्यंत आवश्यक है।

भारत की लगभग 40-50% आबादी कृषि पर निर्भर करती है और यह क्षेत्र देश की सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का लगभग 17.7% (वित्त वर्ष 2024-25) योगदान देता है। जलवायु परिवर्तन के कारण मौसम के पैटर्न में अस्थिरता और अत्यधिक तापमान में वृद्धि ने इस महत्वपूर्ण क्षेत्र को सबसे अधिक प्रभावित किया है। बढ़ती गर्मी, अनियमित वर्षा, सूखा और बाढ़ जैसी घटनाएं फसल उत्पादन में लगातार गिरावट का कारण बन रही हैं। परिणामस्वरूप, किसानों की आय में कमी हो रही है और खाद्य सुरक्षा पर भी संकट मंडरा रहा है। उदाहरण के तौर पर महाराष्ट्र में विदर्भ क्षेत्र को लें। यहाँ 2019 में गंभीर सूखे की स्थिति उत्पन्न हुई थी जिसके परिणामस्वरूप कपास और सोयाबीन जैसी महत्वपूर्ण फसलों की पैदावार में भारी गिरावट आई। यह क्षेत्र पहले से ही किसान आत्महत्या की समस्या से जूझ रहा था और जलवायु संकट ने इसे अपेक्षाकृत गंभीर कर दिया। किसान न केवल अपने कर्जों के बोझ तले दब गए बल्कि उन्हें अपनी आजीविका से भी हाथ धोना पड़ा। जलवायु परिवर्तन का यह प्रत्यक्ष उदाहरण हमें दिखाता है कि किस तरह से यह संकट ग्रामीण भारत के करोड़ों लोगों की जीविका पर गंभीर प्रभाव डाल रहा है।

भारत का **आर्थिक विकास** बड़े पैमाने पर उसके बुनियादी ढांचे पर निर्भर करता है। हालांकि, जलवायु परिवर्तन के कारण हो रही अनियमित मौसम घटनाएं, देश के बुनियादी ढांचे पर भारी दबाव डाल रही हैं। बढ़ते समुद्री स्तर, तटीय बाढ़ और चक्रवात जैसी घटनाओं ने भारत के तटीय शहरों और औद्योगिक क्षेत्रों को गंभीर रूप से प्रभावित किया है। ये घटनाएं न केवल लोगों की जान-माल का नुकसान करती हैं बल्कि उनके पुनर्निर्माण पर भी बड़ी धनराशि खर्च करनी पड़ती है।

उदाहरण के लिए वर्ष 2015 में चेन्नई में हुई भयंकर बाढ़ को याद करें। चेन्नई, जो देश के महत्वपूर्ण आर्थिक केंद्रों में से एक है, बाढ़ के कारण पूरी तरह ठप हो गया। हवाई अड्डे से लेकर रेलवे स्टेशन तक, यातायात और संचार के सारे साधन बंद हो गए। न केवल उद्योगों और व्यापारों को भारी नुकसान हुआ बल्कि आम लोगों के जीवन पर भी इसका व्यापक असर पड़ा। इस प्रकार की प्राकृतिक आपदाओं से पुनर्निर्माण और राहत कार्यों में करोड़ों रुपये खर्च होते हैं जो देश की आर्थिक प्रगति को धीमा कर देते हैं। जलवायु परिवर्तन का असर केवल पर्यावरण और अर्थव्यवस्था तक ही सीमित नहीं है; इसका प्रत्यक्ष प्रभाव लोगों के **स्वास्थ्य** पर भी पड़ता है। अत्यधिक गर्मी, जलवायु से जुड़े रोग और बदलते मौसम के कारण संक्रामक बीमारियों का फैलाव तेजी से हो रहा है। गर्मी से संबंधित बीमारियों जैसे हीट स्ट्रोक, मलेरिया और डेंगू जैसी समस्याओं में वृद्धि हो रही है।

2024 में दिल्ली में तापमान 52.3 डिग्री सेल्सियस तक पहुँच गया था जिससे सैकड़ों लोग हीट स्ट्रोक और अन्य गर्मी से संबंधित बीमारियों से प्रभावित हुए। अत्यधिक तापमान के कारण श्रमिकों की उत्पादकता पर भी गहरा प्रभाव पड़ा क्योंकि उच्च तापमान में काम करना बेहद कठिन हो गया था। यह सीधा उदाहरण दिखाता है कि कैसे जलवायु परिवर्तन के स्वास्थ्य प्रभाव न केवल व्यक्ति को प्रभावित करते हैं बल्कि इससे पूरी अर्थव्यवस्था की श्रमशक्ति भी बाधित होती है। भारत का **पर्यटन उद्योग** देश की आर्थिक संरचना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है जो सालाना करोड़ों रुपये की आय उत्पन्न करता है।

हालांकि, जलवायु परिवर्तन के कारण यह क्षेत्र भी गंभीर संकट का सामना कर रहा है। अत्यधिक मौसम की घटनाएं, बाढ़ और समुद्र के बढ़ते स्तर ने देश के प्रमुख पर्यटन स्थलों को बुरी तरह प्रभावित किया है। इससे न केवल पर्यटकों की संख्या में कमी आई है बल्कि स्थानीय अर्थव्यवस्था पर भी गहरा असर पड़ा है। उदाहरण के तौर पर वर्ष 2018 में केरल में आई भयंकर बाढ़ ने वहाँ के पर्यटन उद्योग को बुरी तरह प्रभावित किया। केरल, जो अपने प्राकृतिक सौंदर्य और 'हाउस बोट' पर्यटन के लिए प्रसिद्ध है, बाढ़ के कारण महीनों तक ठप पड़ा रहा। इससे न केवल स्थानीय पर्यटन व्यवसायियों को नुकसान हुआ, बल्कि राज्य की समग्र अर्थव्यवस्था को भी बड़ा झटका लगा। जलवायु परिवर्तन के इस प्रकार के प्रभाव पर्यटन स्थलों को कमजोर बना रहे हैं जिससे हजारों लोगों की आजीविका पर खतरा मंडराता है।

मत्स्य पालन, जो भारत के तटीय क्षेत्रों में रहने वाले लाखों लोगों की आजीविका का प्रमुख स्रोत है, जलवायु परिवर्तन के कारण बुरी तरह प्रभावित हो रहा है। समुद्री तापमान में वृद्धि और समुद्र के अम्लीकरण के कारण मछलियों की प्रजातियों में कमी आ रही है जिससे मछुआरों को मछलियाँ पकड़ने में मुश्किलें हो रही हैं। इसके अलावा, समुद्र के स्तर में वृद्धि के कारण तटीय क्षेत्रों में निवास कर रहे लोग भी खतरे में हैं। उदाहरण के तौर पर, बंगाल की खाड़ी के तटीय क्षेत्रों में मछलियों की संख्या में भारी गिरावट आई है। यह न केवल मछुआरों की आय को प्रभावित करता है, बल्कि इससे स्थानीय अर्थव्यवस्था पर भी गहरा असर पड़ता है। इसी प्रकार, विनिर्माण उद्योग भी जलवायु परिवर्तन के कारण आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान और ऊर्जा की कमी का सामना कर रहा है।

जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए सरकारों और व्यवसायों को बड़े पैमाने पर अनुकूलन की रणनीतियों को अपनाना होगा। इसमें नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों में निवेश, जल संरक्षण और पर्यावरणीय प्रबंधन प्रणाली का विकास शामिल है। हालांकि, इन उपायों को लागू करने के लिए भारी वित्तीय संसाधनों की आवश्यकता होती है जो विकासशील देशों के लिए एक बड़ी चुनौती है।

उदाहरण के लिए, भारत सरकार ने राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन जैसी योजनाओं को लागू किया है जिसका उद्देश्य नवीकरणीय ऊर्जा की दिशा में देश को आगे बढ़ाना है। हालांकि, इस प्रकार की परियोजनाओं में निवेश करना अत्यंत महंगा है और इससे देश की अर्थव्यवस्था पर भारी दबाव पड़ सकता है। इसके अलावा, इन योजनाओं के प्रभावी रूप से कार्यान्वित होने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में समन्वय और कुशलता की भी आवश्यकता होती है जो कि विकासशील देशों में एक चुनौतीपूर्ण कार्य हो सकता है।

पेड़ों और जंगलों को हटाना, मुख्यतः कटाई, शहरीकरण और कृषि के उद्देश्यों के लिए, वनों की कटाई के रूप में जाना जाता है। इस व्यवहार से जलवायु परिवर्तन पर काफी प्रभाव पड़ता है। पेड़, वातावरण से कार्बन डाइ-ऑक्साइड को अवशोषित करके वैश्विक तापमान के नियमन में योगदान देते हैं। यह कार्बन, जंगल साफ़ करने के दौरान वापस वायुमंडल में छोड़ दिया जाता है जिससे ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन बढ़ता है तथा जलवायु परिवर्तन में वृद्धि होती है। वनों की कटाई से पृथ्वी की गर्मी अवशोषित करने की क्षमता भी कम हो जाती है जिससे वैश्विक तापमान बढ़ जाता है और चरम मौसम की घटनाओं की आवृत्ति बढ़ जाती है।

विश्व बैंक की एक रिपोर्ट के अनुसार, 2030 तक जलवायु परिवर्तन के कारण भारत की जीडीपी में 2.8% की कमी आ सकती है। यह आंकड़ा हमें यह दिखाता है कि जलवायु परिवर्तन का आर्थिक प्रभाव कितना गहरा हो सकता है। इसके अलावा भारतीय मौसम विभाग के आंकड़ों के अनुसार पिछले दो दशकों में भारत में चरम मौसम घटनाओं की संख्या में 20% की वृद्धि हुई है।

यह स्पष्ट संकेत है कि जलवायु संकट हर साल और गंभीर होता जा रहा है और इससे निपटने के लिए ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है। जलवायु परिवर्तन, भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए एक गंभीर चुनौती के रूप में उभरा है। देश को इन संकटों से निपटने के लिए न

केवल तात्कालिक बल्कि दीर्घकालिक समाधान की आवश्यकता है। जलवायु परिवर्तन को रोकने के लिए निम्न उपाय किए जा सकते हैं:

1) **नवीकरणीय ऊर्जा में निवेश** – सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा और हरित हाइड्रोजन जैसे ऊर्जा स्रोतों में निवेश बढ़ाना चाहिए।
2) **जल प्रबंधन और संरक्षण** – जल संरक्षण के लिए आधुनिक तकनीकों का उपयोग और वर्षा जल संचयन को बढ़ावा देना चाहिए।
3) **कृषि में जलवायु-स्मार्ट तकनीकों को अपनाना** – किसानों को जलवायु-स्मार्ट कृषि तकनीकों जैसे सूखा प्रतिरोधी बीज, सटीक सिंचाई और मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने वाली प्रथाओं को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इससे कृषि उत्पादन में सुधार हो सकता है, भले ही मौसम अनिश्चित हो।
4) **तटीय बुनियादी ढाँचे को मजबूत बनाना** – भारत के तटीय शहरों में बाढ़ और समुद्री तूफानों के खतरे को कम करने के लिए स्थायी बुनियादी ढांचे का निर्माण करना आवश्यक है। इसके लिए समुद्री दीवारों, तटीय हरित क्षेत्र और जल निकासी प्रणालियों का विकास किया जाना चाहिए।
5) **जलवायु अनुकूल नीतियों का निर्माण** – देश को ऐसी नीतियाँ बनानी होंगी जो जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने के साथ-साथ नए अवसर भी प्रदान करें। इसमें जलवायु शिक्षा को शामिल करना, अनुसंधान और विकास में निवेश तथा पर्यावरणीय प्रबंधन के लिए कानूनों को सख्ती से लागू करना शामिल है।
6) **सामाजिक जागरूकता** – जलवायु परिवर्तन के खतरों और इसके प्रभावों के बारे में आम लोगों को जागरूक करना भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके लिए सरकार और गैर-सरकारी संगठनों को मिलकर अभियान चलाने चाहिए ताकि लोग जलवायु-अनुकूलन जीवनशैली को अपना सकें।

जलवायु परिवर्तन में भारत की भूमिका

जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए भारत की वैश्विक भूमिका भी महत्वपूर्ण है। भारत जैसे विकासशील देशों का यह कर्तव्य है कि वे वैश्विक मंचों पर जलवायु न्याय की मांग उठाएं। जलवायु परिवर्तन के कारण सबसे ज्यादा नुकसान उन्हीं देशों को हो रहा है जिनका कारक इसमें न्यूनतम रहा है। विकसित देशों को अपने कार्बन उत्सर्जन को कम करने और विकासशील देशों को वित्तीय सहायता प्रदान करने की दिशा में ठोस कदम उठाने होंगे।

वास्तविकता यह है कि जलवायु परिवर्तन एक वैश्विक समस्या है और इसे केवल एक देश द्वारा हल नहीं किया जा सकता। भारत को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सहयोग बढ़ाना होगा, जैसे कि पेरिस समझौते में अपनी भूमिका को और अधिक सशक्त करना। साथ ही, भारत को सीओपी (Conference of Parties) जैसे मंचों पर जलवायु परिवर्तन के मुद्दों को जोर-शोर से उठाना होगा ताकि वैश्विक नेतृत्व इस संकट को प्राथमिकता दे सके। जलवायु परिवर्तन केवल एक पर्यावरणीय समस्या नहीं है; यह एक बहुआयामी संकट है जो भारत की आर्थिक और सामाजिक संरचना को गहराई से प्रभावित कर रहा है। चाहे वह कृषि क्षेत्र हो, बुनियादी ढांचा, स्वास्थ्य या पर्यटन—सभी क्षेत्र इसके दुष्प्रभावों का सामना कर रहे हैं। इसके अलावा, भविष्य में जलवायु परिवर्तन की वजह से आर्थिक अस्थिरता और बढ़ सकती है जिससे गरीबी और असमानता में वृद्धि हो सकती है।

इसलिए, भारत को अपने आर्थिक विकास की दिशा में बढ़ते हुए जलवायु परिवर्तन के खतरों से निपटने के लिए तुरंत ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है। यह एक दीर्घकालिक संघर्ष है लेकिन सही नीतियों, वैज्ञानिक नवाचार और सामाजिक जागरूकता के साथ भारत इस चुनौती का सामना करने के लिए तैयार हो सकता है तथा एक स्थायी और समृद्ध भविष्य की दिशा में कदम बढ़ा सकता है। जलवायु परिवर्तन, भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए एक चुनौतीपूर्ण संघर्ष है लेकिन यह अवसर भी प्रदान करता है कि हम अपने विकास के मॉडल को और अधिक स्थाई और लचीला बना सकें। हम केवल प्रकृति से लड़कर नहीं, बल्कि उसके साथ संतुलन बनाकर ही इस संघर्ष को जीत सकते हैं। अब समय है कि हम अपनी नीतियों, प्रथाओं और जीवनशैली में बदलाव लाएं ताकि जलवायु संकट के इस दौर से उभरकर एक नई दिशा में कदम बढ़ाया जा सके। भारत में जलवायु परिवर्तन के प्रभावों का समाधान केवल सरकार या किसी एक संस्था के प्रयास से संभव नहीं होगा। इसके लिए सभी क्षेत्रों, संगठनों और व्यक्तियों को मिलकर कार्य करना होगा ताकि हम आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित, स्थाई और समृद्ध भविष्य सुनिश्चित कर सकें।

-अर्थशास्त्री (आर्थिक अनुसंधान एवं विश्लेषण)
कॉरपोरेट कार्यालय, नई दिल्ली

नराकास पुरस्कार

बैंक की मुख्य शाखा वाराणसी को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), वाराणसी द्वारा वर्ष 2024 के दौरान राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य-निष्पादन के लिए शाखा संवर्ग के अंतर्गत द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया। दिसंबर, 2024 को आयोजित नराकास की बैठक में यह पुरस्कार नराकास अध्यक्ष के कर कमलों से शाखा प्रभारी श्री मनीष अस्थाना तथा सहयोगी अधिकारी ने प्राप्त किया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हरदोई द्वारा राजभाषा में श्रेष्ठ कार्य निष्पादन हेतु आयोजित वार्षिक शील्ड प्रतियोगिता 2023-24 में बैंक की शाखा हरदोई को तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। दिसंबर, 2024 को आयोजित नराकास हरदोई की अर्धवार्षिक समीक्षा बैठक में शाखा प्रबंधक श्री सुमित अवस्थी ने यह पुरस्कार नराकास अध्यक्ष के कर कमलों से ग्रहण किया।

हिंदी माह समापन समारोह -2024

बैंक के प्रधान कार्यालय में हिंदी माह-2024 के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री स्वरूप कुमार साहा, कार्यपालक निदेशक श्री रवि मेहरा, कार्यपालक निदेशक श्री राजीव के कर कमलों से पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर विभागों के महाप्रबंधक भी विशेष रूप से उपस्थित रहे। उच्चाधिकारियों ने पुरस्कृत प्रतिभागियों को बधाई दी और उन्हें इसी प्रकार राजभाषा संबंधी गतिविधियों में सहभागिता के लिए प्रेरित किया।

कार्यक्रम के अंत में मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री गजराज देवी सिंह ठाकुर ने हिंदी माह-2024 को सफल बनाने के लिए समस्त विभागीय प्रतिनिधियों का आभार व्यक्त किया।

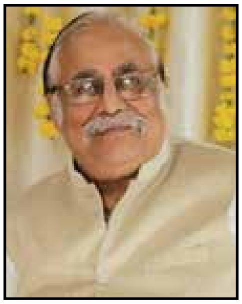

समस्या की जड़

वी. एस. मिश्रा

कभी-कभी ऐसा लगता है कि दुनिया में इतनी समस्या है। इसके लिए मुझे कुछ करना चाहिए, जैसे कोई लेख लिखूं और समस्या के प्रति लोगों को जागरूक करूं लेकिन फिर सोचा कि लेख लिखने वाला काम तो चल ही रहा है, अखबार वाले लिखते हैं। बच्चों को समस्या के विषय में विधिवत ज्ञान देकर या रटवा कर लिखवाया ही जा रहा है तो समस्या के निदान के लिए लेख-यज्ञ में तो आहूति दी ही जा रही है। मैं कुछ अलग करूंगा, अलख जगाऊंगा, मोर्चा निकालूंगा लेकिन इस कार्य में तो मोर्चा वालों के लिए चाय, बीड़ी, समोसा में अर्थदंड लग जाएगा। दूसरी विधि ठीक रहेगी जिसमें साँप मरे न मरे लाठी टूटे तो बिल्कुल सुरक्षित रहे। काफी मशक्कत के बाद भूख हड़ताल की तरफ ख्याल गया किंतु जितनी तेजी से गया उससे ज्यादा गति से वापस भी आ गया। इस मोबाइल युग में किसे फुर्सत है कि सड़क के किनारे अथवा पेड़ के नीचे बैठे लोग-बाग की समस्या के लिए प्राण उत्सर्ग करने के लिए आमादा व्यक्ति पर दृष्टि डालें।

अख़बार पढ़ने का शौक तो मुझे था ही, यू-ट्यूब, वाट्स-एप का भी नियमित ग्राहक हूँ। इन सोहबतों से और कुछ मिले न मिले, दुनिया की समस्याओं के विषय में जानकारी मिलती रहती है। विपदा यह कि एक अनुशासित अनुसरणकर्ता होने की वजह से मैं पूर्ण मनोयोग से समस्या के निदान के लिए तड़पने भी लगता हूँ। समस्या के स्वरूप को समझने के लिए समस्या का वर्गीकरण एक सार्थक प्रयास हो सकता है लेकिन जहाँ समस्या कोरोना विषाणु की तरह अपना रूप बदल दे तो वर्गीकरण भी कोई हल प्रस्तुत नहीं कर सकता। तूफानों से लड़ने की हिमाकत का दंभ हो तो समस्या की पूंछ पकड़कर पटक-पटक कर उसकी इतिश्री करना ही बेहतर रणनीति होगी।

तो विधान और रणनीति के अनुरूप फैसला यह किया गया कि पहले राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, वैश्विक, राष्ट्रीय, प्रांतीय आदि श्रेणियों में बांटकर उसी के अनुरूप हल की तलाश हो तो कम से कम भूख हड़ताल जैसी घटिया बात तो दिमाग में नहीं आएगी। आप ही बताइए किसी वैश्विक समस्या के फेरे में अपनी जान जोखिम में डालना अपना नुकसान तो करेगा ही, संयुक्त राष्ट्र संघ की भी किरकिरी होगी।

अमेरिका जैसे सर्वशक्तिमान देश में कार्यालय, विश्व के चुनिंदा राजनयिक, दिन-रात वैश्विक समस्या को सुलझाने उलझाने में करोड़ों डालर की आहुति दे रहे हों, वहाँ एक अदना आदमी सिर्फ अपने प्राण उत्सर्ग से समस्या को सुलझा लें जाए तो कैसी

हंसी की बात होगी। दूसरी ओर जब राजनीति स्वयं एक समस्या हो तो राजनैतिक समस्या की परिभाषा क्या होगी। मेरे जैसे मनीषी, जिसने सामाजिक विज्ञान, मानविकी, भौतिकी, जीव विज्ञान आदि में परिभाषा रट-रटकर परीक्षा जैसी विकराल समस्या को धूल चटा दी हो, वह परिभाषा की परिमिती को समझे बिना हाथ कैसे डालेगा?

राजनैतिक समस्या परिभाषा की मोहताज नहीं और मेरी फितरत कि बिना परिभाषा के सफलता को आत्मसात ही नहीं कर सकता। इसीलिए निर्णय लिया गया कि इस राजनैतिक समस्या पर बाद में विचार किया जाए और राष्ट्र-भक्ति का तकाज़ा भी यही है कि पहले राष्ट्र को समस्या से मुक्त कर दिया जाए। यहाँ भी कठिन स्थिति पैदा हो गई। राजनैतिक समस्या का अपरिभाषित स्वरूप से अधिक राष्ट्रीय समस्या में परिभाषा की बहुलता आड़े आ रही थी लेकिन सच्चा राष्ट्रभक्त तो वही है जो निडर होकर कैसी भी समस्या हो और उपसर्ग में राष्ट्रीय शब्द हो तो क्षुद्र कठिनाइयों की उपेक्षा कर सामने डट जाए। मैंने भी निर्णय ले लिया कि बहुत हो गया, इन राष्ट्रीय समस्याओं की ऐसी-तैसी करनी जरूरी है।

शुरुआत में सभी राष्ट्रीय दिवस पर जन-जनार्दन के विचार एकत्रित करने चाहिए और फिर इन पुनीत दिवस पर उनके संकल्प को, उनकी दिनचर्या पर सामग्री इकट्ठी की जाए। यहाँ भाव यह था कि अनेक लोगों के संकल्प के सामने समस्या दुबक जाएगी परंतु दस-बीस लोगों के साथ बातचीत से स्पष्ट हो गया कि एक औसत अवकाश के दिन की तरह इस दिवस का महत्व है।

सरकारी उत्सव में भी जोश और उमंग में यह प्रच्छन्न रहता है कि जल्दी से समारोह समेटा जाए और अवकाश को अवकाश की तरह ही रहने दिया जाए। हमारे बचपन में राष्ट्रीय दिवस पर पैकेज उपलब्ध होता था। प्रभात फेरी, विद्यालय में परेड, झंडोत्तोलन, मिष्टान्न की उपलब्धि और गुरूजनों के सारगर्भित वक्तव्य व पृष्ठभूमि में बजते देशभक्ति के गीत, हमारे मन में इतना उत्साह भर देते थे कि अगर सामने कोई देश का दुश्मन दिख जाता तो हम नौनिहाल ही काम तमाम कर देते, सेना तक बात पहुंचती ही नहीं लेकिन जैसे कितनी अर्थपूर्ण प्रवृतियों का, विचारों का क्षरण हो गया है, हमारे राष्ट्रीय दिवस का भी मात्र समारोह स्वरूप ही अवशेष बचा है, भाव का तो क्षरण हो गया है।

अब फिर से "शून्य से शून्य" की यात्रा के उपरांत समस्या के कारणों पर दृष्टि डालने की आवश्यकता पड़ी। बुद्ध ने कहा था

"प्रतीत्यसमुत्पाद" दुःख है तो कारण भी होगा और कारण है तो निदान भी होगा। समस्या से संघर्षरत मेरे मस्तिष्क को भगवान बुद्ध ने एक नई दिशा दे दी। अब तो मेरा संकल्प बन गया समस्या के कारण तक पहुंच जाना। कारण मिला नहीं कि निदान सामने होगा। समस्या की जड़ की ओर मेरा प्रयाण "अज्ञात मूल तरूवर" की खोज में भ्रमित कर रहा था पर पौरूष का तकाज़ा था कि चाहे जो हो समस्या के कारण तक पहुंचना ही होगा। एक बात तो साफ थी कि कारण जानने के लिए समस्या की सूची आवश्यक है।

आज तकनीक का युग है। मोबाइल पर संदेश भेज-भेजकर समस्या को ही मोबाइल की भाषा में वायरल कर दूं। तकनीक और समस्या का घालमेल तो युग की पहचान है। आप किसी सरकारी घोषणा नीति को पढ़ लीजिए, लिखा होगा समस्या के निराकरण के लिए अद्यतन तकनीक का प्रयोग किया जाएगा। इतनी बार यह जिक्र होगा कि समझना कठिन है कि यह समस्या को बढ़ाने के लिए प्रयुक्त किया गया होगा अथवा निदान के लिए। मुझे लगा कि यह तरीका भी कुछ खास कारगर नहीं रहेगा क्योंकि मोबाइल प्रयोग कर्मी यू-ट्यूब या ऐसे ही मनोरंजक एप के लिए तकनीक का प्रयोग कर रहे हैं।

मेरे द्वारा भेजे गए संदेश को अगर लाइक नहीं मिला तो मैं स्वयं मानसिक रूप से दुःखी हो जाऊंगा। कितनी बार संदेश प्रेषक को "लाइक" नहीं मिलने के संबंध में उनकी व्यथा सुन चुका हूं और भुक्त-भोगी मुझसे सहमत होंगे कि इतने परिश्रम के बाद कोई संदेश

बनता है, लिखा जाता है और मरदूद कोई "लाइक" नहीं मिलता तो इस संसार से और क्या अपेक्षा की जाए। इतनी आत्मग्लानि के लिए मैं कतई तैयार नहीं था और फिर नए सिरे से विचार करने की शुरुआत हुई। समस्या है, दिख भी रही है और कोई "ब्रह्म" तो है नहीं कि किसी को न दिखे। सबको दिखती होगी।

जाहिर है अच्छा यह रहेगा कि परस्पर चर्चा करते हुए बात बढ़ाई जाए। बढ़ते-बढ़ते पंचायती राज संस्थाओं से होते हुए विधानसभा, लोकसभा तक पहुंच जाएगी तो बात बनेगी और मेरी बिल्कुल अनावश्यक खुजलाहट को भी विराम मिलेगा। जब देश के कर्णधारों तक बात पहुंच जायेगी तो समस्या की क्या मजाल कि टिकी रह सके। फिर देखा कि इन संस्थाओं में समस्या जैसी किसी चीज पर विचार मंथन नहीं होता बल्कि कुछेक मंथन तो ऐसे होते है कि शक होता है कि बहस में कोई विचार ही नहीं है।

अब तक इतने विकल्पों पर सोच चुका था कि और सोचने की हिम्मत नहीं थी कि अचानक ख्याल आया कि मैं आखिर किस समस्या के विषय में चिंतित होकर "वायरल" होकर राजधानी तक घुम आया। तो ऐसा करते हैं कि समस्या की सूची बना लेता हूं, प्राथमिकता तय करता हूं और तब विचार करूंगा कि समस्या के साथ क्या किया जाए?

मेरे एक पड़ोसी हैं। स्वस्थ, सुंदर, विद्वान। मैं नहीं जानता कि उनकी शैक्षणिक पृष्ठभूमि क्या है परंतु आप किसी भी विषय पर बात कीजिए, वह कारण की व्याख्या कर देते हैं। इस तरह के प्राणी पर मेरे पड़ोस या मेरे मित्र का ही एकाधिकार नहीं है, आपके अगल-बगल में भी मिल जाएंगे। इनकी विशेषता है कि सिनेमा, खेल-कूद, दर्शन, गणित, धर्म, कर्म पर साधिकार बोलेंगे। यह अवश्य है कि उनकी बातों के साथ उनके व्यक्तित्व का कोई संबंध नहीं होगा। उनका आदर्शवाद दूसरों के लिए है, स्वयं के लिए वह "चलता है" वाली भंगिमा को श्रेष्ठ मानते हैं। आज मुझे उनकी तीव्र आवश्यकता थी क्योंकि जिस तरह मैं समस्याओं के पीछे पड़ा था कि उनकी असारगर्भित बातों से ही मुझे समस्या सूची के लिए कुछ तत्व मिल जाता।

इतिहास साक्षी है कि "तत्वज्ञान" के लिए हमारे संतों ने कितना त्याग किया है। मुझे तो चार कदम चलकर किसी के अनर्गल प्रलाप को सुनना मात्र था। लिहाज़ा मैं उनके निवास की ओर चला और खुशकिस्मत इतना कि वह सामने से आते दिखे। मेरी ओर उपेक्षा की दृष्टि से देखकर बोले "सब्जी लाने जा रहा था। आजकल भाव कितने बढ़ गए हैं। मैं तो कद्दू ही खरीदता हूं" और इसके बाद कद्दू की सब्जी के लाभकारी गुणों की व्याख्या भी शुरु हो गई। फिर बोले कि देखो देश में क्या हो रहा है। मुझे लगा कि यह तो कुआं ही प्यासे के पास आ रहा है। इस विषय पर उनकी वाचालता मेरे लिए काम की हो सकती है। "हाँ तो देखो देश में क्या हो रहा है। पहले मैं अखबार पढ़कर उस पर अपनी टिप्पणी भेजता था तो छाप देते थे, अब नहीं छापते।" मैं मन ही मन बोला अखबार वाले अपनी ग़लती नहीं दुहराते। मैंने देखा कि मेरे प्रश्नों से अधिक उनकी अपनी समस्या से वह ग्रस्त हैं और मेरा एक क्षण भी उनके साथ रहना मेरे संकल्प के लिए घातक होगा। बहरहाल, मैंने आत्मविश्लेषण से ही सबक को निपटाना शुरू किया।

सड़क टूटी होने की समस्या, जल आपूर्ति से संबंधित समस्या, बिजली समस्या, अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं की सूची, यहाँ तक कि अपनी टूटी चप्पल, चाय में अधिक शक्कर, रूमाल तक की समस्या की सूची बन गई और एक बार समस्या समझ में आ जाये तो निराकरण तो चुटकी में हो जाएगा। मैं आश्वस्त हो गया कि समस्या को समझ जाने में ही समझदारी है।

मेरी इस अखंड तपस्या में विघ्न डालने एक अन्य मित्र पहुंच गए। मित्र बड़े रोचक हैं, बड़े विचारशील और यह मानकर चलते हैं कि उनकी तरह देश में हर व्यक्ति खाली है, घंटे है व्यर्थ करने के लिए और आते ही चाय सिगरेट की फरमाइशें। फिर गप्पों की इतनी बड़ी और बेतरतीब श्रृंखला कि आप के दो-तीन घंटे निकल जाएंगे और हासिल शून्य। तारीफ यह कि उठते समय बताते जाएंगे कि आज की बात

बड़ी सारगर्भित रही। गप्प में सार की तलाश करना कितना कठिन है पर मित्र की पदवी पर है तो स्वीकार करना ही पड़ता है। इच्छा हो रही थी कि समस्या की सूची में ऊपर ही उनका भी नाम लिख दूं कि परमादरणीया मेरी धर्मपत्नी जी ने सूचना दी कि महरी आज नहीं आएगी, जल्द से नहाकर, खाना खाकर छुट्टी करो। विचार कौंधा, यह महरी की विकट समस्या तो हमारी फेहरिस्त में है ही नहीं। विचार मंथन समाप्त कर, इतने अनुत्पादक कार्य में समय बेकार करना मेरे जैसे मनीषी के लिए ठीक नहीं था पर श्रीमती जी के आदेश की अवहेलना का जोखिम कैसे उठाता? लिहाज़ा, आज्ञाकारी पति की तरह नहाने खाने चला गया। इसका यह लाभ मिला कि खाने के बाद मुझे अपने संकल्प पर विचार करने के लिए प्रचुर समय मिल गया।

फिर से वही बखेड़ा लेकर सोचने लगा। इस बार नींद के झोंके भी आ रहे थे तो उनींदा हालत में सोचना, समस्या की जड़ तक पहुंचा सकता है। बहरहाल गणित की कहावत याद आ गई, अगर किसी समस्या का हल न मिले तो समझो समस्या का अस्तित्व ही नहीं है।

जब समस्या की ओर ध्यान केंद्रित किया तो पता चला कि मैं समस्या के जाल में फसकर सब्जी नहीं ला पाया और इसका प्रतिफल मुझे दो स्तर पर भुगतना पड़ेगा। पहले पत्नी जी की जली कटी और फिर सूखी रोटी, बिना दाल-सब्जी के। फिर लगा कि असल समस्या तो मैं खुद हूँ। छोटी-छोटी चीजें भूलकर बड़ी-बड़ी समस्या की सूची के चक्कर में भोजन आवास पर ही चोट हो गई है लेकिन समाज सेवा का गुरूतर भार तो लेना ही पड़ेगा और भूख एक तरह से समस्या निराकरण की दिशा में पहला त्याग हुआ। यह भी कि घर की सूची बना कर उनको समाप्त कर दूं तो देश दुनिया के लिए अनुभव भी मिल जायेगा और समय भी। मेरा यकीन मानिए, घर के समस्याओं की सूची इतनी लंबी बनी कि मैं आज तक उनसे मुक्त नहीं हो पाया हूँ और यही कारण है कि दूसरी समस्या की ओर ध्यान नहीं दे सका। यह मेरी ही नहीं इस चराचर जगत की समस्या है कि हमारे घरों की समस्याएं समाप्त होती ही नहीं कि दूसरी ओर देख सकें।

समस्या की शुरुआत हमेशा से घर के अंदर होती है। धीरे-धीरे हमें खोखला बनाती है। फिर संसार की समस्याओं पर ध्यान कौन दे। ऐसी ही सूचियां बनाकर, बातचीत कर हम जगत के प्रति अपने कर्तव्य की इति श्री मान लेते हैं। सच तो यही है, जीवन है तो समस्या है और समस्या है तो जीवंतता है क्योंकि हर समस्या का कोई हल हो न हो, सबमें एक सीख है कि जीवन के झंझावत से बहादुरी से ही पार पाया जा सकता है। बिना चुनौतियों के जीने का स्वाद बनता ही नहीं। भोजन में भी खट्टे, मीठे, नमकीन का संतुलन न हों तो वह नीरस हो जाता है। हमारी शुरुआत तो घर से होनी ही चाहिए। यह सब्जी-भाजी, रोज के सामान, कपड़ों की इस्त्री, गैस की किल्लत और समय-समय पर जीवन-साथी के उलाहने जीवन की समस्या भी है और जीवन के महत्वपूर्ण अंग भी। ऐसी छोटी-छोटी चुनौतियाँ हमारे संयम की परीक्षा लेकर जगत में सकारात्मक संघर्ष के लिए हमें तैयार कर देती हैं। समाज का अनेक प्रारूप है और परिवार उसकी सबसे छोटी व महत्वपूर्ण इकाई है। जिसने परिवार की समस्याओं की सूची बनाकर उसका हल ढूँढ लिया तो संसार की समस्या का हल भी निकाल ही लेगा।

सेवानिवृत्त वरिष्ठ प्रबंधक
पंजाब एण्ड सिंध बैंक

कार्टून कोना

प्रदीप कुमार रॉय
सेवानिवृत्त मुख्य प्रबंधक
पंजाब एण्ड सिंध बैंक

संसदीय राजभाषा समिति का दौरा कार्यक्रम

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति ने 27 दिसंबर, 2024 को बैंक के आंचलिक कार्यालय दिल्ली-2 का राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया। समिति ने राजभाषा कार्यान्वयन के संबंध में बैंक अधिकारियों से चर्चा की और उन्हें यथोचित निर्देश दिए। समिति ने अपेक्षा जताई कि बैंक, राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति करेगा।

समिति सदस्यों में श्री भर्तृहरि महताब, श्री श्रीरंग आप्पा बारणे, श्री सतीश कुमार गौतम, श्री टी. एम. सेल्वागणपति, श्री ओमप्रकाश भूपालसिंह उर्फ पवन राजेनिंबालकर, डॉ. धर्मशीला गुप्ता और श्री ईरण्ण कड़ाड़ी इत्यादि उपस्थित रहे।

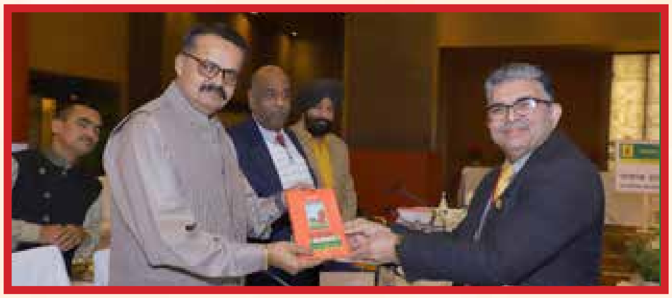

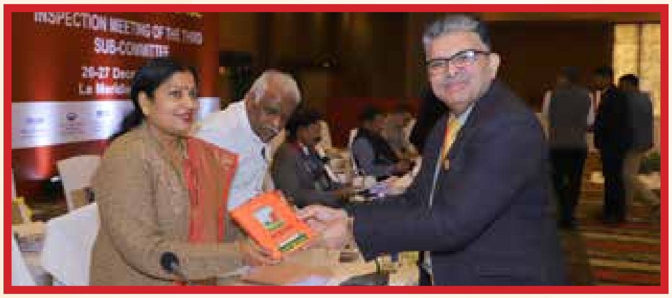

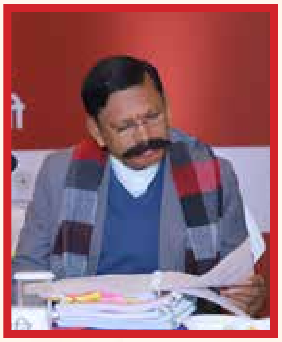

बैंक की ओर से कार्यक्रम में महाप्रबंधक श्री एस वी एम कृष्णा राव, आंचलिक प्रबंधक दिल्ली-2 श्री संजय प्रकाश श्रीवास्तव, आंचलिक कार्यालय दिल्ली 2 में पदस्थ मुख्य प्रबंधक श्री प्रमोद सक्सेना तथा प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग में पदस्थ मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) श्री निखिल शर्मा ने सहभागिता की।

विभ्रम में विज्ञापन

राहुल रंजन

मुद्रित माध्यम जनसंचार का प्रथम आधारभूत माध्यम है जिसमें समाचार-पत्र, विचार अभिव्यक्ति का सबसे लोकप्रिय और सशक्त साधन है। समाचार पत्रों को समाज का दर्पण भी कहा गया है। समाज में जो घट चुका है जो घटित हो रहा है या हो सकता है, उसका संपूर्ण लेखा-जोखा अखबारों में प्रकाशित होता है। आज आधुनिक पत्रकारिता के अंतर्गत समाचार पत्रों के लिए आवश्यक सामग्री संकलन हेतु समय के साथ होड़, समाचार-सामग्री का समुचित संपादन, सार्थक और आकर्षक शीर्षक का प्रयोग, विज्ञापन प्राप्त करने की क्षमता और पाठकों तक पहुंचने की सुनियोजित प्रक्रिया को पत्रकारिता का अभिन्न अंग माना जाता है।

वर्तमान में भूमंडलीकरण, उदारीकरण तथा निजीकरण के परिणामस्वरूप उपभोक्तावाद दिन-प्रतिदिन बढ़ रहा है। प्रिंट माध्यम भी इससे अछूता नहीं रहा है। प्रिंट माध्यम, विज्ञापनों के प्रचार-प्रसार का एक सशक्त माध्यम है। वर्तमान में यह कहा जा सकता है कि विज्ञापन और समाचार-पत्र दोनों एक-दूसरे के पूरक बन गए हैं। अक्सर हमारे साथ ऐसा होता है कि समाचार-पत्र में किसी खबर को पूरा पढ़ने के बाद पता चलता है कि वो खबर नहीं विज्ञापन है। आज अधिक संख्या में पाठकों का ध्यान आकर्षित करने के लिए विज्ञापन खबर की भेष में और खबर विज्ञापन की भेष में आ रहे हैं। समाचार-पत्र में खबरों के विभ्रम में विज्ञापन परोसे जा रहे हैं जो कि पहली नजर में विज्ञापन नहीं, खबर प्रतीत होते हैं।

विज्ञापन की अवधारणा - विज्ञापन एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा हम किसी सामग्री या व्यक्ति विशेष के प्रति जनसामान्य को आकर्षित करने का प्रयास करते हैं। अंग्रेजी में विज्ञापन के लिए 'Advertisement' शब्द का प्रयोग किया जाता है जो कि लैटिन

भाषा के 'Advert ere' से बना है। विज्ञापन शब्द 'वि' और 'ज्ञापन' इन दो शब्दों से मिलकर बना है। 'वि' से तात्पर्य विशेष और 'ज्ञापन' से आशय ज्ञान कराना अथवा सूचना देना है। इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका के अनुसार 'किसी वस्तु के विक्रय अथवा किसी सेवा के प्रसार हेतु मूल्य चुकाकर की गई घोषणा ही विज्ञापन है।' वास्तव में यह प्रचार का एक शक्तिशाली साधन है जिसके द्वारा वस्तुओं और सेवाओं के विक्रय का विकास होता है। विक्रय व्यवस्था में विज्ञापन वस्तु का परिचय कराने, उसकी विशेषताएं तथा उसके लाभ बताने का कार्य संपादित कर ग्राहकों को आकृष्ट करता है। वर्तमान में तो विज्ञापन किसी भी उद्योग के लिए अपरिहार्य बन गया है। जिस तरह रक्त संचरण के बिना जीवन चलना संभव नहीं है, उसी तरह वर्तमान

स्वरूप में बिना विज्ञापन के किसी भी उद्योग, वस्तु, संस्थान और समाचार माध्यमों का चलना असंभव हो गया है।

मुद्रित माध्यम और विज्ञापन - आज ये दोनों एक-दूसरे पर निर्भर हैं और एक-दूसरे के पूरक बन गए हैं। एक ओर जहां विज्ञापनदाता को अपने उत्पाद के प्रचार और बिक्री के लिए जनसंचार माध्यमों का सहारा लेना पड़ता है, वहीं जनसंचार माध्यमों को अपनी अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने और सुचारू रूप से संचालन व मुनाफे के लिए विज्ञापनों की आवश्यकता पड़ती है। भारत में मुद्रित माध्यमों के विकास के साथ-साथ विज्ञापनों का भी विकास होता चला आया है जिसमें दोनों के परस्पर संबंधों का स्वरूप बदलता गया है। यह कहा जा सकता है कि समाचार पत्रों के स्वरूप को बदलने में विज्ञापनों की बड़ी भूमिका रही है।

समाचार-पत्र का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है उसकी विषय-वस्तु। विषय-वस्तु के प्रति ईमानदारी और प्रतिबद्धता से ही पाठकों में समाचार-पत्र विशेष के लिए लगाव और विश्वसनीयता बढ़ती है। ऐसे में अगर वे समाचार-पत्र खबरों के रूप में विज्ञापन प्रकाशित करते हैं तो यह उन पत्रों की छवि और ईमानदारी पर प्रश्नचिह्न खड़ा करता है। पत्रकारिता का यह धर्म है कि वह अपने लक्ष्य समूह तक सही सूचनाएं पहुंचाए।

बाजार ने आज समाचार-पत्र और उसके पाठकों के प्रतिबद्धता-विश्वसनीयता के तंतु को भली-भाँति जान समझ लिया है और वह इसका इस्तेमाल अपने आर्थिक हित के लिए कर रहा है। विज्ञापनदाताओं ने बाजार में जरूरत और विलासिता की वस्तुओं की मांग पैदा करने के लिए समाचार माध्यमों का सहारा लिया है। विज्ञापनों ने खबरों में घुसपैठ कर ली है जिससे समाचार और विज्ञापन के बीच का अंतर बहुत बारीक सा हो गया है। विज्ञापन, खबर और संपादकीय के बीच की दूरियां कम होने के साथ ही पत्रकारिता में एडवरटोरियल का जमाना आ गया है जिसके तहत विज्ञापन को संपादकीय सामग्री या समाचार की तरह प्रस्तुत किया जाने लगा है।

राजस्व का मुख्य स्रोत विज्ञापन – विज्ञापन, किसी भी समाचार-पत्र के लिए राजस्व का मुख्य स्रोत है। जितना ज्यादा समाचार-पत्र का प्रसार होगा, उतना ही उसे विज्ञापन भी मिलेगा। इस तरह समाचार-पत्र के लिए पाठकों की संख्या बढ़ाना जरूरी हो जाता है ताकि वह अधिक से अधिक विज्ञापन हासिल कर सके। शायद यही कारण है कि समाचार पत्रों में आज ऐसी 'पॉपुलर' सामग्री ज्यादा छापी जा रही है जो पाठकों को अपनी ओर आसानी से आकर्षित करती है। इनमें फैशन, खेल, लाइफस्टाइल, मनोरंजन, सिनेमा, पार्टी आदि विषयों से जुड़ी खबरें शामिल हैं।

विज्ञापन प्रायः मीडिया ट्रेंड और शब्दावलियों का अनुसरण करता है और नए मीडिया उत्पादों को बनाता है। खबर के रूप में छपने वाले विज्ञापन अर्थात् एडवरटोरियल भी विज्ञापन और मीडिया के इन्हीं संबंधों की उपज है। चूंकि विज्ञापनदाताओं की रुचि उन प्रकाशित सामग्रियों में उतनी नहीं होती जो विज्ञापन के लिए जगह और संभावना तैयार न करते हों, इसलिए समाचार-पत्र ऐसी सामग्री तैयार करने लगे हैं जो विज्ञापन के अनुकूल हों और उसके लिए अधिक से अधिक जगह बनाएं। इससे वैसे विषयों पर सामग्री प्रकाशित होने लगी जो उच्च और मध्यम वर्ग को अपील करते हों क्योंकि उच्च और मध्यम वर्ग के पाठक विज्ञापनदाताओं के लिए बाजार के सबसे अच्छे उपभोक्ता होते हैं।

एडवरटोरियल की अवधारणा - आज की हवा में भी बाजार के संदेश तैर रहे हैं इसलिए किसी का ध्यान आकर्षित करने के लिए नए-नए तरीके आजमाए जा रहे हैं। आज उपस्थिति से ज्यादा महत्वपूर्ण है ध्यान में आना। बहुत से पाठक समाचार-पत्र पढ़ते समय विज्ञापनों पर ध्यान नहीं देते और आगे बढ़ जाते हैं पर दो या उससे अधिक खबरों के बीच यदि कोई विज्ञापन हो तो उससे बचा नहीं जा सकता। विज्ञापन को एडिटोरियल के रूप में प्रस्तुत करने की कला को एडवरटोरियल कहते हैं।

एडवरटोरियल दो शब्दों से मिल कर बना है- 'एडवरटाइजिंग' यानि विज्ञापन और 'एडिटोरियल' यानि संपादकीय। यानि जिन चीजों का विज्ञापन करना है उन्हें खबर बनाकर समाचार-पत्र में प्रस्तुत करना। वैसे एडवरटोरियल जिनका प्रसारण टेलीविजन पर किया जाता है, उसे इन्फॉरमेशियल कहा जाता है। यह अंग्रेजी के दो शब्दों से मिलकर बना है, 'इन्फॉरमेशन' और 'कॉमरशियल'। इन्फॉरमेशियल टेलीविजन पर प्रसारित होने वाला छोटी या सामान्य अवधि का एक कार्यक्रम है जिसमें सूचना को प्रस्तुत करने के साथ-साथ किसी उत्पाद के बारे में बताया जाता है और उसे खरीदने या उपयोग करने की सलाह दी जाती है। मुद्रित माध्यम में ऐसे विज्ञापनों के लिए एडवरटोरियल का प्रयोग किया जाता है। मेरियम वेबस्टर के अनुसार इस शब्द की उत्पति वर्ष 1946 में हुई थी।

एडवरटोरियल की संरचना - समाचार-पत्र में एडवरटोरियल फीचर की संरचना का अनुसरण करते हैं। जिस तरह यदि कोई फीचर राजनीतिक मुद्दे पर हो तो फीचर लेखक उस मुद्दे या विषय के पक्ष या विपक्ष में पाठकों को एकमत करने का कार्य करते हैं। एडवरटोरियल और एडवरटाइजिंग फीचर की संरचना संपादकीय सामग्री और विज्ञापन के बीच की रेखा को धुंधला बनाना तथा नए रूपों का सृजन करना है। एक एडवरटोरियल भी इसी का उदाहरण है जो कि संपादकीय सामग्री का अंश है जिसका भुगतान किसी विज्ञापनदाता ने किया है। उसी तरह प्रोमोश्नल फीचर में भी संबंधित उत्पाद, विचार या सेवा के पक्ष में माहौल बनाने के लिए शब्द लिखे जाते हैं। फीचर में संबंधित उत्पाद, विचार, सेवा की खूबियों के बारे में बताया जाता है और उसका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। ये फीचर पहली नज़र में तो खबर का ही एक हिस्सा लगते हैं क्योंकि इन फीचरों के शीर्षक से भी यह तय करना मुश्किल हेता है कि यह खबर है या किसी उत्पाद का विज्ञापन।

फीचर को पूरा पढ़ने के बाद पाठक आश्वस्त हो जाता है कि यह विज्ञापन ही है जिसमें चित्र, पंचलाइन, शीर्षक, उप शीर्षक, बॉडी, लोगो आदि की जगह संपादकीय सामग्री के भेष में शाब्दिक अभिव्यक्ति का प्रयोग किया गया है। समाचार-पत्र के किसी भी पृष्ठ पर एडवरटोरियल हो सकते हैं। मुख्य रूप से ये ऐसे परिशिष्ट अंकों में छापे जाते है जो सिनेमा, रियल एस्टेट, शिक्षा, फैशन आदि पर आधारित हों। कहीं-कहीं ये रंगीन बॉक्स के अंदर होते हैं तो कहीं बिना किसी बॉक्स के होते हैं। इनमें और खबरों में एक मुख्य अंतर यह होता है कि इनकी सामग्री का चयन व अनुमोदन विज्ञापनदाता के हाथ में होता है।

खबरों का विभ्रम बनाम एडवरटोरियल - लोगों को हमेशा से विज्ञापन की अपेक्षा खबर यानि एडिटोरियल पर ज्यादा विश्वास रहा है। पहले समाचार-पत्र व संपादक एडिटोरियल में एक शब्द भी हेर-फेर की इजाजत नहीं देते थे। यह स्पष्ट निर्देश होता था कि खबर तथ्यों पर आधारित हो, प्रमाणिक हो। इसलिए अपनी प्रमाणिकता व सच्चाई के कारण एडिटोरियल पक्ष ने पाठकों की विश्वसनीयता अर्जित की। अपनी विश्वसनीयता और सही सूचना के लिए ही समाचार-पत्र पढ़े जाते हैं और अधिक बिकते हैं।

विज्ञापन के बारे में आम धारणा है कि विज्ञापन, किसी वस्तु के प्रचार और उसके उद्देश्य के पक्ष में माहौल बनाने का प्रयास है। जो कुछ वस्तु के प्रचार में कहा जाता है वह सब सच पर आधारित है, ऐसी धारणा नहीं है। इसलिए व्यापार की दुनिया ने खबर को ही व्यवसाय के लिए इस्तेमाल करना शुरू किया। इस तरह एडवरटोरियल जन्मा और बढ़ा तथा पाठकों के सामने खबरों के विभ्रम में विज्ञापनों को परोसा जाने लगा। कई समाचार-पत्रों में खबर को विज्ञापनों से अलग दिखाने के लिए एडवरटोरियल या 'एडवरटाइजमेंट' जैसे शब्द इस्तेमाल किए जाते हैं। विज्ञापनों के लिए अलग किस्म के फॉन्ट व फॉन्ट साइज, उनके चारों ओर लकीरें खींचने या स्पांसर्ड फीचर अथवा विज्ञापन में कहीं कोने में एडीवीटी जैसे शब्द बहुत छोटे आकार में लिखने का काम किया जाता है जो कई बार पाठकों की निगाह में पड़ता है और कई बार नहीं।

समाचार-पत्रों में कभी-कभी एडवरटोरियल का प्रयोग विज्ञापन के साथ सहायक संपादकीय सामग्री छापने के लिए भी किया जाता है। इस स्थिति में विज्ञापनदाता, विज्ञापन की जगह के साथ-साथ खबर की जगह का भी भुगतान करते हैं। एडवरटोरियल सामान्य विज्ञापनों से दिखने में अलग लगते हैं। वे अपने प्रस्तुतीकरण व डिजाइन में किसी प्रकाशित लेख की तरह लगते हैं। अधिकतर अखबारों में ऐसे विज्ञापनों में ऐसे विज्ञापनों को छापने के बाद ऊपर या नीचे की तरफ कोने में विज्ञापन लिख देते हैं ताकि उनकी पहचान एक विज्ञापन

के रूप में हो सके। कुछ अखबारों में ऐसे विज्ञापनों को छापने के लिए 'प्रोमोश्नल फीचर' या 'इम्पेक्ट फीचर' या 'एडवरटोरियल' या 'advt' लिख दिया जाता है। ऐसे विज्ञापन कभी-कभी पूरे पृष्ठ पर भी छपे होते हैं। पृष्ठ के ऊपर 'एंटरटेनमेंट और प्रोमोश्नल फीचर' लिखा होता है।

पाठकों की भूमिका - प्रिंट माध्यमों पर किसी भी विवाद या चर्चा के केंद्र में पाठक ही होते हैं क्योंकि विज्ञापनदाताओं, जनसंपर्क अधिकारियों के साथ समाचार-पत्र का लक्ष्य भी पाठक वर्ग तक पहुंचना ही होता है। समाचार-पत्र पढ़ते हुए पाठक, पत्रकार पर भरोसा करता है कि वह खबर की नजाकत और मूल्य को पकड़ कर सही तथ्यों के साथ उसे प्रस्तुत करेगा। एडवरटोरियल और प्रोमोश्नल या एडवरटाइजिंग फीचर ने समाचार-पत्र पर पाठकों के इस भरोसे को भंग करने का काम किया है।

यदि समाचार-पत्र में किसी उद्योग के बारे में कोई खबर छपी है कि किस तरह अमुक व्यक्ति ने उद्योग को घाटे में से निकालकर सफलता की एक नई ऊंचाई तक पहुंचाया। पाठक इसे पढ़कर यही सोचेगा कि पत्रकार ने सही तथ्यों के आधार पर अमुक उद्योग के बारे में ये बातें लिखी है और एक प्रतिभाशाली व्यक्ति की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला है जबकि कई बार यह लेख एक प्रोमोश्नल फीचर होता है जिसके लिए अमुक उद्योग ने अपनी छवि को सुधारने और मजबूत बनाने के लिए भुगतान किया है। आज ऐसे कई क्षेत्रों से जुड़े उद्योग हैं जो इस तरह के फीचर व एडवरटोरियल का प्रयोग अपनी छवि बनाने के लिए एक हथियार की तरह कर रहे हैं।

यहाँ सवाल रह जाता है कि क्या पाठक वर्ग, विज्ञापन और संपादकीय सामग्री के बीच इस बारीक अंतर को लेकर जागरूक हैं? क्या उन्हें पता है कि दोनों में अंतर कैसे किया जाए? क्या वे दोनों के बीच के अंतर से होकर गुजरना जानते हैं? यदि हाँ, तो क्या वे इस अंतर से संतुष्ट हैं? क्या वह कोई परिवर्तन चाहते हैं? इन सवालों के जवाब के लिए अलग से व्यापक स्तर पर सर्वेक्षण किया जा सकता है। हमें, पाठकों को संपादकीय सामग्री और विज्ञापन के बीच के अंतर को समझने की आवश्यकता है ताकि खबरों के रूप में परोसे गए विज्ञापनों के विभ्रम से बचा जा सके।

- राजभाषा अधिकारी
आंचलिक कार्यालय होशियारपुर

फूलों सा है सुंदर जीवन

फूलों की ख़ुशबू, रंगों का संसार
जैसे जीवन में हो एक प्यारा सा प्यार।

कोमल पंखुड़ी, जैसे सजा हो उपहार
खुशियाँ बिखेरे, ये रूपों का निखार।

चमकते रंगों में बसी एक नई आस
हर फूल में छुपी हो एक छोटी सी बात।

दिखाते हैं हमें, हर रंग में हर्ष
जीवन की राह में, यही हो सच्चा स्पर्श।

फूलों का खिलना, जीवन की तरह
नित नया पल, नित नया सफर।

जैसे बगिया में बिखरे हैं ये प्यार
वैसे ही जीवन में बसी हो सौगातें यार।

फूलों की ख़ुशबू जैसे हवा का गीत
हर दिल में इनका प्रेम हो अनमोल रीत।

फूलों में छिपा है प्यार का संदेश,
हर दिल में बस जाए, जीवन का अद्भूत वेश।।

- सीमा शर्मा
अधिकारी
आंचलिक कार्यालय पंचकूला

काव्य मंजूषा

बैंक में नौकरी

कर मेहनत पाई नौकरी सरकारी
हम भी बन गए बैंक कर्मचारी,
हमें क्या पता था किस्मत ने की है
पुरजोर भाग्य को लतयाने की तैयारी।

दूर के ढोल सुहावने लगते हैं
इस बात की थी हमें जानकारी,
मित्रो अगर कर रहे हो बैंकिंग की तैयारी
तो ये सूचना आपके लिए जनहित में है जारी।

जब मिली नौकरी हमें
हमारा दिमाग का नहीं ठिकाना था,
उस दिन तो हर जगह
घर, दोस्तों और रिस्तेदारों में अपना ही फसाना था।

जब आया नियुक्ति पत्र
तब एक झटके में दिमाग हमारा ठिकाने था,
मिली थी नियुक्ति कई सौ किलोमीटर दूर
अब तो वही आने वाले समय बिताना था।

घर की जरूरतों के लिए घरवालो को ही छोड़ दिया
अब तो हमने अपना रिश्ता सिर्फ बैंक से ही जोड़ लिया,
जाने का है समय बैंक में, आने का न कोई समय दिया
अधिकारी बना कर हमें, हर अधिकार से मुक्त किया।

गलती ना होने पर भी कभी-कभी ग्राहक घूरता है
ये वही है जो अन्य सरकारी विभाग में मुहँ तक नहीं खोलता है,
छोटे- छोटे ऋण के लिए भी जवाबदेही निकाली जाती है
कुछ अच्छा गर कर जाओ तो संदेहास्पद नज़रें हो जाती है।

बैंक प्रबंधन भी गजब खेल रचाता है
रविवार को ही ऋण मेला सजाता है,
देखा जाए तो अर्जित अवकाश भी कम नहीं होता
पर उन अवकाश को उपभोग करने का दम नहीं होता।

सिर्फ दुःख ही नहीं, सुख भी इसी नौकरी से पाया है
जब भी किसी ग्राहक ने कहा, मेरा ये काम सिर्फ आपकी बदौलत ही हो पाया है,
मन का हर दर्द, छू मंतर हो जाता है
जब हमारे किए काम से किसी को घर और किसी को रोज़गार मिल जाता है।।

-अलीमुद्दीन सिद्दीकी
अधिकारी
शाखा सुभाष रोड अलीगढ़

"कुर्सी"

यह कुर्सी मैंने तुमको दिया है
सिर्फ बैठने के लिए
बैठे रहो
हिलना नहीं।

मेरा कुछ मकसद है
जिसको पूरा करने के लिए
मैंने तुमको यहाँ बैठाया
बैठे रहो
हिलना नहीं।

तुम्हारे बिरादरी
तुम्हारे वंशजों को
अभी तक मिट्टी पर ही
बैठाया जा रहा है
फिर भी मैंने
तुमको कुर्सी दिया
बैठे रहो
हिलना नहीं।

तुमको यहाँ बैठाने के लिए
मेरे कितने पूज्यवर
मुझसे नाराज हुए
क्योंकि अब भी तुम तुच्छ हो
इसलिए कहता हूँ
बैठे रहो
हिलना नहीं।

- यशोदा मुर्मु
सेवानिवृत्त प्रबंधक

उसे याद रखना ज़रा हिन्द वालों

है सरहद पे तनकर खड़ा शान से, गगन चीरकर उड़ रहा यान से
सागर की लहरों को मुट्ठी में बांधे, जो लड़ता है आँधी से तूफ़ान से

जो जल थल और अम्बर में दुश्मन से डटकर समर कर रहा है
उसे याद रखना ज़रा हिन्द वालों, जो हर पल तुम्हारे लिए मर रहा है

आना पड़ा छोड़ चंचल लड़कपन, देने चला देश को अपना यौवन
नहीं रोक पाए जिसे माँ के आँसू, निकला डगर पे जो पाषाण कर मन

जो यारों की महफिल से उठकर है आया, कोई प्रेम बंधन नहीं रोक पाया
भाई-बहन, दोस्त, माता-पिता, घर, जो मीलों कई दूर है छोड़ आया

रहें राष्ट्र और राष्ट्र के जन सुरक्षित, इसी ध्येय से प्राणोत्सर्ग कर रहा है
उसे याद रखना ज़रा हिन्द वालों, जो हर पल तुम्हारे लिए मर रहा है

हिमालय की बर्फीली नश्तर हवाएं, उन्हें झेलकर भी जो तनकर खड़ा है
मरुस्थल की तपती हुई रेत लू में, जो क़दमों को रोके बिना ही बढ़ा है

बांधे कफ़न सर पे, गौरव पताका खुले आसमां पर जो फहरा रहा है
उसे याद रखना ज़रा हिन्द वालों, जो हर पल तुम्हारे लिए मर रहा है

वो भी किसी की है आँखों का तारा, यादों में अपनों की वो भी है रोता
उसने भी देखे हैं जीवन के सपने, पलकों पे ख्वाबों को भी है संजोता

कितनी ही भीगी हुई प्यासी आँखें, तकती हैं उसकी भी राहों को अपलक
वो भी किसी के लिए है सहारा, वो भी किसी के है जीवन का दीपक

लेकिन सभी देशवासी हैं अपने, इसी भावना को अमर कर रहा है
उसे याद रखना ज़रा हिन्द वालों, जो हर पल तुम्हारे लिए मर रहा है

-सुदेश कुमार
ग्राहक सेवा प्रतिनिधि
आंचलिक कार्यालय दिल्ली-2

हिंदी कार्यशाला

आंचलिक कार्यालय गुरुग्राम

आंचलिक कार्यालय पंचकूला

आंचलिक कार्यालय चेन्नई

आंचलिक कार्यालय दिल्ली-2

आंचलिक कार्यालय गुरदासपुर

आंचलिक कार्यालय भोपाल

हिंदी कार्यशाला

स्टाफ प्रशिक्षण कॉलेज रोहिणी, नई दिल्ली

आंचलिक कार्यालय बरेली

आंचलिक कार्यालय नोएडा

आंचलिक कार्यालय लखनऊ

सहभागी

सहभागी

विपिन कुमार

भारतीय अर्थव्यवस्था पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव

वैसे तो समस्त विश्व ही वर्तमान समय में अनेकानेक चुनौतियों का सामना कर रहा है यथा जनसंख्या वृद्धि, क्षेत्र विस्तार युद्ध, हथियारों की प्रतिस्पर्धा आदि परंतु जलवायु परिवर्तन वर्तमान समय की सबसे बड़ी वैश्विक चुनौतियों में से एक है। भारत जैसे विकासशील देशों पर इसका प्रभाव विशेष रूप से पड़ना स्वाभाविक ही है जहां अर्थव्यवस्था में बड़ा योगदान कृषि और प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर है। भारतीय अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि, उद्योग और सेवा क्षेत्रों पर बहुतायत से निर्भर करती है। इन सभी क्षेत्रों पर जलवायु परिवर्तन का अलग-अलग प्रकार से प्रभाव पड़ता है।

पृथ्वी की जलवायु प्रणाली में प्राकृतिक और मानवीय गतिविधियों के परिणामस्वरूप अनेक परिवर्तन होते हैं। जलवायु परिवर्तन का तात्पर्य उन स्थाई और दीर्घकालिक परिवर्तनों से है जो या तो मानवीय अथवा प्राकृतिक रूप से हुए हैं। समस्त विश्व में औद्योगिक क्रांति के बाद हरित-गृह गैसों का उत्सर्जन तेजी से बढ़ा है जिससे वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड और मिथेन जैसी खतरनाक गैसों की मात्रा बढ़ रही है। इसके कारण पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है और फलस्वरूप औसतन वैश्विक तापमान में वृद्धि हो रही है। परिणामस्वरूप हिमनद का बर्फ पिघलना, टूटकर बहना, समुद्र तल का मैदानी क्षेत्रों की ओर बढ़ना, कहीं सूखा, कहीं बाढ़, कहीं चक्रवात और अन्य जलवायु परिवर्तन का प्रभाव चहुं ओर दिखाई पड़ रहा है जिसमें अधिकतर प्रभाव मानवीय गतिविधियों का ही परिणाम है।

यदि भारतीय अर्थव्यवस्था की बात की जाए तो यह मुख्य रूप से तीन बिंदुओं पर आधारित है; कृषि, उद्योग और सेवा क्षेत्र। जलवायु परिवर्तन का इन तीनों पर अलग-अलग प्रभाव पड़ रहा है। इन तीनों

क्षेत्रों पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव का विश्लेषण निम्न प्रकार से किया गया है-

कृषि पर प्रभाव : भारत में अधिकतर भाग में कृषि, मानसून पर निर्भर करती है। यहाँ की अधिकतर फसलें मौसम के ऊपर निर्भर करती है। जलवायु परिवर्तन से मौसम की अस्थिरता बढ़ रही है जिससे मानसून अनियमित हो रहा है और किसानों को फसल उत्पादन में कमी, अधिक लागत और आय में अनिश्चितता का सामना करना पड़ता है। अत्यधिक वर्षा से बाढ़ आती है जो फसलों को नष्ट कर देती है जबकि सूखा, फसलों के लिए पानी की कमी पैदा करता है। तापमान में वृद्धि से फसलों की उत्पादकता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है, विशेषकर गेहूं, चावल और अन्य प्रमुख खाद्य फसलों पर। अत्यधिक सर्दी के कारण भी फसलों की वृद्धि रुकती है और मनवांछित पैदावार नहीं हो पाती। इसके कारण देश की अर्थव्यवस्था भी प्रभावित होती है।

उद्योगों पर प्रभाव : जलवायु परिवर्तन के कारण भी समस्त विश्व में उद्योगों पर प्रतिकूल असर पड़ रहा है। प्राकृतिक आपदाओं की बढ़ती घटनाओं का सीधा असर उद्योगों पर हो रहा है। उदाहरण के लिए तटीय क्षेत्रों में समुद्र स्तर बढ़ने से वहाँ स्थित उद्योगों को भारी क्षति का सामना करना पड़ता है। बढ़ते तापमान के कारण भू-जल स्तर नीचे जा रहा है जिसके कारण ऊर्जा और पानी की कमी के कारण उत्पादन लागत बढ़ रही है। साथ ही अत्यधिक तापमान से श्रमिकों की कार्यक्षमता में भी गिरावट आ रही है जिससे उत्पादन में बाधा उत्पन्न हो रही है। प्रतिव्यक्ति आय मे बड़ी कमी आ रही है जिससे श्रमिकों तथा उद्यमों का मनोबल गिर रहा है।

सेवा क्षेत्र पर प्रभाव : भारत की अर्थव्यवस्था में सेवा क्षेत्र का बहुत बड़ा योगदान है। जलवायु परिवर्तन का सेवा क्षेत्र में भी बड़ा असर दिखाई दे रहा है, विशेष रूप से पर्यटन, विश्रामालय और स्वास्थ्य सेवाओं पर। बढ़ते/घटते तापमान के कारण, पर्यटकों की संख्या में कमी देखी जा रही है। समुद्र तटीय पर्यटन स्थलों पर समुद्र जल स्तर के बढ़ने से पर्यटकों की संख्या में गिरावट आ रही है जबकि पहाड़ों में भी भू-स्खलन के कारण पर्यटन उद्योग को भी नुकसान पहुँच रहा है। इसी प्रकार विश्रामलयों में भी पर्यटक नहीं पहुँच रहे हैं तो इस क्षेत्र में भी जलवायु परिवर्तन का व्यापक असर दिखाई पड़ रहा है।

अन्य विशेष प्रभाव :

स्वास्थ्य पर प्रभाव : जलवायु परिवर्तन के कारण, अत्यधिक तापमान और मौसम की अस्थिरता से स्वास्थ्य समस्याएं बढ़ रही हैं जिसका भारतीय जनता के स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। इसमें सभी प्रकार के प्रदूषण का असर देखा गया है। इसमें ऊष्मा के प्रभाव से होने वाली मौतें, पानी और भोजन से होने वाली बीमारियाँ और वायु प्रदूषण से संबंधित बीमारियाँ प्रमुख हैं। इसके अलावा स्वास्थ्य सेवा प्रणाली पर दबाव बढ़ रहा है क्योंकि जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न बीमारियों के कारण अस्पतालों और चिकित्सा सेवाओं की मांग बढ़ रही है। इन स्वास्थ्य समस्याओं के कारण कार्यबल की उत्पादकता पर असर पड़ता है जिससे आर्थिक गतिविधियों में गिरावट आ रही है।

प्राकृतिक जल संसाधनों पर प्रभाव : भारत में प्राकृतिक जल संसाधनों पर भी जलवायु परिवर्तन का बड़ा प्रभाव देखा जा रहा है। हिमालय के ग्लेशियरों का पिघलने से देश की नदियों में असामान्य जल प्रवाह हो रहा है जिससे खेती योग्य भूमि का विनाश हो रहा है। बाढ़ के कारण कहीं जल की अधिकता है तो कहीं इससे सिंचाई, पीने का पानी और औद्योगिक जरूरतों के लिए जल की कमी हो रही है। यह स्थिति किसानों के साथ-साथ उद्योगों को भी प्रभावित कर रही है जो उत्पादन और ऊर्जा आपूर्ति के लिए जल पर निर्भर हैं। समस्त विश्व के साथ-साथ भारत में भी पहले से ही जल संकट की स्थिति गंभीर है और जलवायु परिवर्तन के कारण स्थिति और अधिक चिंतनीय बन गई है।

प्राकृतिक ऊर्जा क्षेत्र पर प्रभाव : जलवायु परिवर्तन से ऊर्जा आपूर्ति में भी अनिश्चितता उत्पन्न होती है। भारत की ऊर्जा आवश्यकताओं का बड़ा हिस्सा कोयला, पेट्रोलियम आदि से पूरा होता है। कोयले का तो अधिकतर भाग देश मे उपलब्ध है परंतु पेट्रोलियम के लिए भारत बहुत से दूसरे देशों पर निर्भर है। पवन, सौर और हाइड्रो पावर जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग बढ़ाने के प्रयास हो रहे हैं लेकिन इनके उत्पादन में भी जलवायु का सीधा प्रभाव पड़ रहा है। देश में अभी भी इस क्षेत्र मे बहुत कार्य करने की आवश्यकता है। साथ ही साथ देश के नागरिकों को भी इसमे जागरूक होने की आवश्यकता है।

आर्थिक विकास पर प्रभाव : जलवायु परिवर्तन के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था की विकास दर पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। देश की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि उत्पादन, औद्योगिक

उत्पादन और सेवा क्षेत्र पर निर्भर है। अगर कृषि उत्पादन, औद्योगिक उत्पादन और सेवा क्षेत्र में स्थिरता नहीं बनी रहती है तो यह देश की जीडीपी वृद्धि को धीमा कर सकता है। साथ ही देश की अर्थव्यवस्था की विकास दर पर भी नकारात्मक रूप से असर डाल सकता है। जलवायु परिवर्तन का प्रभाव विशेष रूप से गरीब, कमजोर और निम्न मध्यम वर्गों पर अधिक पड़ता है। छोटे किसानों, मछुआरों और अन्य प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर लोगों की आय अस्थिर हो जाती है। इसके कारण गरीबी और आर्थिक असमानता बढ़ सकती है। निम्न मध्यम वर्ग भी बहुतायत से प्राकृतिक संसाधनों पर ही निर्भर होता है। इसके अलावा, जलवायु आपदाओं से प्रभावित लोगों का पुनर्वास और पुनर्निर्माण करने के लिए सरकार पर अतिरिक्त वित्तीय बोझ पड़ता है। बहुत से निर्बल और लाचार इसके कारण राजकीय सेवाओं पर निर्भर हो जाते है।

जलवायु परिवर्तन प्रभावों से निपटने के उपाय :

वैसे तो विश्व के समस्त देश ही जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों से निपटने के उपाय कर रहे हैं लेकिन इसके लिए भारत को भी कुछ दीर्घकालिक और सतत उपाय करने होंगे जो देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण का मार्ग भी प्रशस्त कर सकें। इनमें से कुछ उपाय निम्नवत हैं

कृषि क्षेत्र में सुधार : भारत की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि पर निर्भर करती है। सरकार की ओर से कृषि क्षेत्र में सुधार लाने के लिए किसानों को जलवायु-प्रतिरोधी फसलें उगाने, सिंचाई प्रौद्योगिकी में सुधार और जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए जिससे उच्च गुणवत्ता वाली फसलें तैयार की जा सके। इसके साथ ही किसानों को मौसम पूर्वानुमान सेवाओं और कृषि बीमा योजनाओं के बारे में जागरूक किया जाना चाहिए ताकि वे जलवायु के अस्थिर प्रभावों से सुरक्षित रह सकें। किसानों को फसल बीमा, उचित मूल्य आदि से प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

जल का उचित व प्रभावी संचयन : जल संकट से निपटने के लिए सरकार के साथ-साथ समस्त देशवासियों को मिलकर जल संरक्षण और संचयन के उपायों को अपनाना चाहिए। साथ ही, जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न जल संसाधनों की समस्याओं का समाधान करने के लिए नदियों को आपस में जोड़ने, वर्षा जल संचयन और छोटे जलाशयों और नहरों के निर्माण जैसे उपाय किए जा सकते हैं। वर्षा जल संचयन एक बहुत प्रभावकारी उपाय है जिससे भूमि जल स्तर को ऊपर लाया जा सकता है।

ऊर्जा ने नए स्रोतों को बढ़ावा : भारतीय अर्थव्यवस्था को नए आयाम तक ले जाने के लिए नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों जैसे सौर, पवन और बायो ऊर्जा के उपयोग को बढ़ावा देना चाहिए। सरकार को इसे बढ़ावा देने के लिए विशेष छूट देनी चाहिए। इससे न केवल ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित होगी, बल्कि जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता कम होगी जो हरित-ऊर्जा गैसों के उत्सर्जन का प्रमुख स्रोत हैं। सरकार ने इस दिशा में कई कदम उठाए हैं जैसे कि "अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन" की स्थापना करना, लेकिन इसके विस्तार और कार्यान्वयन में तेजी लाने की आवश्यकता है। साथ ही इसमे विश्व के अन्य देशों को भी साथ मिलकर अपने अपने स्तर पर योगदान करना होगा।

शिक्षा, प्रचार और प्रसार : जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों से निपटने के लिए जनता में जागरूकता फैलाना देश के प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य होना चाहिए। इसके बारे मे शिक्षा का प्रचार व प्रसार आवश्यक है। इसके लिए देश में, प्रदेश में, देश के सभी विद्यालयों, महाविद्यालयों, कार्यालयों और समाज के अन्य क्षेत्रों में जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण संरक्षण के बारे में जागरूकता कार्यक्रम चलाए जाने चाहिए। इससे लोग पर्यावरण-हितैषी जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित होंगे और देश की प्रगति मे भागीदार होंगे।

जलवायु परिवर्तन न सिर्फ विश्व की अपितु भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए भी एक गंभीर चुनौती है। इसका प्रभाव कृषि, उद्योग और सेवा क्षेत्रों पर स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है। हालांकि, भारत में जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए बहुत से नीतिगत प्रयास किए जा रहे हैं लेकिन यह समस्या इतनी जटिल और व्यापक है कि इसके समाधान के लिए न सिर्फ भारत के बल्कि विश्व के प्रत्येक नागरिक को अपनी अपनी जिम्मेदारी से जलवायु परिवर्तन से होने वाले दुष्प्रभावों के प्रति सचेत रहते हुए इसे रोकने हेतु अपने-अपने स्तर पर प्रयास करने होंगे।

- अधिकारी
कॉरपोरेट कार्यालय जनसंपर्क विभाग

राजभाषा संगोष्ठी

आंचलिक कार्यालय लखनऊ में 19 दिसंबर, 2024 को "आंतरिक कामकाज में राजभाषा" विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता आंचलिक प्रबंधक श्री सतबीर सिंह द्वारा की गई। मुख्य वक्ता के रूप में प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग में पदस्थ मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) श्री निखिल शर्मा को आमंत्रित किया गया था। संगोष्ठी में आंतरिक कामकाज में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने और उसके महत्व पर चर्चा की गई जिसमें हिंदी टायपिंग टूल्स, ऑन-लाइन बैंकिंग शब्दावली, मशीनी अनुवाद इत्यादि प्रमुख बिंदु रहे।

पंकज चंदनानी

ऑडिट का पेंच

लेखक ने तनावग्रस्त जीवन-शैली तथा दैनिक कार्यक्षेत्र में होने वाली घटनाओं को कल्पना के साथ इस प्रकार प्रस्तुत करने का प्रयास किया है कि पाठक समूह, घटनाक्रम से थोड़ा प्रसन्नचित हो सके। वर्तमान समय ऐसा है कि सभी व्यक्तियों को अपना ही काम सर्वोपरि लगता है। साथ ही कार्यालयीन औपचारिकताओं से जन सामान्य पर पड़ने वाले प्रभाव को भी रेखांकित किया गया है। लेख के साथ पाठक का जुड़ाव महसूस कराने के लिए लेख में बोलचाल के शब्द भी हैं।

मैनेजर - सुनो मनोज! सोमवार को ऑडिटर आ रहा है सब फाइलें अपनी जगह पर तो है ना ब्रांच में?

मनोज - जी सर!

मैनेजर - तो कल तुम ऑडिटर को ले आना राजू रिक्शेवाले के साथ।

मनोज - जी सर, मैं समय से ले आऊंगा उनको।

मैनेजर - आराम से ले आना। क्या जल्दी है वैसे भी हमें कल देर हो जाएगी बिटिया का जन्मदिन है मंदिर होते हुए आएंगे। उनको वो कच्चे वाले लंबे रास्ते से ले आना, उनको भी तो ग्रामीण भारत का स्वाद आने दो।

मनोज - जी सर।

(अगले दिन ऑडिटर मनोज के साथ ब्रांच पहुंचता हैं। मैनेजर हरीश, सहायक मैनेजर सतीश और बड़े बाबू रमेश जी उनके फीके स्वागत के लिए पहले से ही शाखा के अंदर मौजूद थे।)

मैनेजर (ऑडिटर से) - और पाटिल साहब, कोई तकलीफ तो नहीं हुई यहां आने में?

ऑडिटर - अरे! कुछ खास नहीं हरीश, बस ब्रांच थोड़ा दूर है स्टेशन से।

मैनेजर - सो तो है।

ऑडिटर - तो हरीश जी, इस बार कौन सा कंप्यूटर दे रहे हो मुझे? पिछली बार वाला तो बहुत ही बेकार था।

(ब्रांच कर्मी आंखों ही आंखों में मैनेजर को चेतावनी देते हैं कि मेरा सिस्टम मत दे देना)

मैनेजर - सर आप मेरे सिस्टम पर बैठ जाइए।

ऑडिटर - अरे भाई हरीश! सिस्टम पर बैठना थोड़े ही है, मुझे अपना काम करना है और जोर से हंस देता है हा हा हा ...

(इस चुटकुले पर कोई नहीं हंसता और ऑडिटर सिस्टम में अपनी फाइल्स डाउनलोड करने लगता है)

ऑडिटर - तो सतीश जी लोन करने से पहले जांच-परख सही से तो कर रहे हैं ना आप ?

(इस सवाल का जवाब सब जानते थे)

यस सर (तपाक से जवाब आता है)

ऑडिटर - और आप रमेश बाबू, कैश बराबर तो चल रहा है ना?

रमेश बाबू - यस सर! (बिना किसी उत्साह के साथ)

ऑडिटर - तो चलिए मुझे स्ट्रांग रूम में कैश चेक करवाइए।

रमेश बाबू - जी चलिए सर।

(दोनों स्ट्रांग रूम चले जाते हैं)

मैनेजर बाकी स्टाफ से - सुनो सब लोग! ये ऑडिटर कम से कम शुक्रवार तक ऑडिट करेगा, सुबह भी जल्दी आना चाहेगा और शाम तक भी देर तक रुकना चाहेगा। इनका घर यहां से सिर्फ़ दो-तीन घंटे की दूरी पर है तो यह सोमवार से शुक्रवार यहां काम करके शनिवार, रविवार अपने घर वीकेंड मनाएगा तो सबसे निवेदन है कि इन महाशय से ज्यादा इधर-उधर की बातें न करें, काम पर पूरा ध्यान दें वरना यह ऑडिट अगले हफ्ते तक भी खींच सकता है।

मनोज- तो इनका इंतजाम लग्जरी रूम में करते हैं, वह बस स्टैंड वाला।

मैनेजर - अरे नहीं! नॉर्मल रूम ही ठीक रहेगा, इनको ज्यादा कंफर्टेबल मत करो।

मनोज - जी सर!

(रमेश बाबू ऑडिटर के साथ कैश चेक करके वापस आता है और अपने काम में लग जाते हैं।)

ऑडिटर - भाई हरीश, यह चमकदार ट्रॉफी कैसी है आपकी डेस्क पर ?

मैनेजर - सर पिछले क्वार्टर में हमारी ब्रांच की लोन ग्रोथ, सर्कल में सबसे बेहतर थी, हमारी शाखा प्रदेश में दूसरे और भारत में टॉप टेन में थी!

ऑडिटर - वेल डन हरीश पर एक बात कहूं हरीश..

मैनेजर -जी सर!

ऑडिटर - यह पुरस्कार अपनी जगह है परंतु इन पुरस्कारों के खातिर लोन न करना। कभी भी, सफलता के बहुत से बाप होते हैं, असफलताएं लावारिस होती है एक गलती हुई नहीं कि आप ऊपरी लोगों की आंखों की किरकिरी बन जाते हैं, चार्जशीट बहुत भारी होती है मेरे दोस्त।

(छोटी सी भावुक स्पीच खत्म होती है। इस स्पीच के पीछे का मकसद वातावरण को गंभीर करना था और यह बहुत ही जांचा परखा हथियार था उस अनुभवी ऑडिटर का। समस्त स्टाफ गंभीरता से काम में लग जाता हैं और तीन-चार घंटे बीत जाते हैं लंच का समय होता है।)

ऑडिटर - भाई हरीश, अब तो भूख लग रही है।

हरीश - जी सर, लंच कर लेते है।

(सब लोग अपना डब्बा निकालने लगते हैं इतने में एक ग्राहक का प्रवेश होता है)

ग्राहक - मुझे अपने लॉकर में काम है।

सतीश - आप 10 मिनट रुक जाइए, हम खाना खाकर आपका लॉकर खुलवा देते हैं।

ग्राहक - टाइम नहीं है छोटे साहब, मेरे को।

मैनेजर - आप 10 मिनट रुक जाइए फिर आप आराम से लॉकर देख लीजिएगा।

(ग्राहक कुछ बड़बड़ाता हुआ बुझे मन से मान जाता है। सब लोग साथ में बैठकर खाना खाने लगते हैं)

ऑडिटर- भाई हरीश, सब कुछ बहुत अच्छा है। बस पकोड़े थोड़े गरम होते तो मजा ही आ जाता।

मैनेजर - मनोज, आज कहां से ले आए ?

मनोज - वो पहलवान हलवाई के इधर से!

मैनेजर- वो तो हर आधे घंटे में पकोड़े बनाता हैं।

मनोज - सर उसका बकाया बढ़ता जा रहा है।

मैनेजर - अच्छा आने दो पहलवान को करते हैं चुकता।

(लंच समाप्त होता है, प्रतीक्षा कर रहा ग्राहक मैनेजर के पास आता है)

ग्राहक - हो गया भोजन बड़े सॉब ?

मैनेजर- जी, सतीश लाकर ऑपरेट करवा दो।

सतीश - जी सर।

ग्राहक - आज तो मैं अपना सब कीमती सामान निकाल लूंगा, बहुत टाइम लेते हैं आप लोग।

(ग्राहक अपना सामान गुस्से में लेकर चल पड़ता है)

ऑडिटर - हरीश, यह कैसा गुस्सा है ?

मैनेजर - ग्राहक थोड़ा भोला है सर!

ऑडिटर - उम्मीद है तुम लोग भोले नहीं हो, हा हा हा....

(इस व्यंग्य पर फिर कोई प्रतिक्रिया नहीं होती और ऑडिटर कंप्यूटर की स्क्रीन में घुस जाता है। कुछ घंटे बीतते हैं और पहलवान चाय ले आता है)

मैनेजर - भाई तुम तो चार कप ही चाय ले आए होगे ?

पहलवान - जी साहब मुझे नहीं पता था कि कोई आया हुआ है। खैर कोई बात नहीं मैं अभी बोल देता हूं एक और चाय आ जाएगी।

(पहलवान फोन लगता है, सामने से कोई फोन उठाता है, फोन लाउडस्पीकर पर ही होता है)

सामने वाला इंसान - (फोन पर) जी भैया ...

पहलवान - एक और चाय भेजो जल्दी।

सामने वाला इंसान - बैंक वाली चाय बना दे?

(पूरा स्टाफ पहलवान की तरफ देखने लगता है, पहलवान हाओ हाओ कहता हुआ कवर करने की कोशिश करता है पर देर हो चुकी होती है। पहलवान अपराधबोध में छत की ओर देखने लगता है।)

पहलवान- सीलन हो रही है छत में सर।

मैनेजर - करते हैं कुछ, कोई हो तो बताइएगा।

पहलवान - है एक ठो, पर वह सारा पैसा पहले ही मांगता है।

मैनेजर - अरे दे देंगे भाई काम ठीक होना चाहिए और हां आपका भी पेमेंट कल सुबह ले लीजिएगा।

पहलवान - दे देना बाद में, पैसा कहां जा रहा है!

मैनेजर - अच्छा!

(सब चाय पीने में व्यस्त हो जाते हैं)

ऑडिटर - अरे हरीश इस ऑटो लोन में तो डाक्यूमेंट्स कंप्लीट नहीं है।

मैनेजर - लाइए सर में देखता हूं।

(करीब-करीब पूरी फाइल पलटी जाती है)

मैनेजर - सर, सब ठीक है।

ऑडिटर - अरे एक बार फिर से देखो, सतीश जी आप भी देख लो।

(फिर पूरी फाइल पलटी जाती है)

सतीश - ठीक है सर।

ऑडिटर - अरे भाई ड्राइविंग लाइसेंस की कॉपी कहां है पार्टी की ?

मैनेजर - लगवा लेंगे सर पार्टी यही पास में ही रहती है।

ऑडिटर - मुझे तो लगता है बाकी ऑटो लोन में भी यही कहानी होगी।

मैनेजर - जी सर।

ऑडिटर - वैसे तो सब कुछ ठीक है आपकी ब्रांच में पर कुछ ना कुछ तो लिखना ही पड़ता है हम लोगों को तो यह प्वाइंट लिख लेता हूँ, आप जल्द करवा लीजिएगा।

मनोज - जी सर!

(बारिश शुरू हो जाती है)

ऑडिटर - भाई बारिश में चाय पकोड़े से आनंद ही आ जाता है।

मैनेजर - मनोज, पहलवान को फोन लगा दो।

मनोज - जी सर!

(चाय पकौड़ों का दौर चलता है। सारा स्टाफ आने वाले कुछ दिनों तक ऑडिटिंग के लिए खुद को मानसिक रूप से तैयार करने में लग जाता है, बारिश थम जाती है, अंधेरा हो चुका है, सारा स्टाफ ऑडिटर से शटर गिराने का इशारा मिलने की उम्मीद छोड़ चुका है, तभी एक चमत्कार होता है और ऑडिटर की नजर घड़ी की सुई पर टिक जाती है।)

ऑडिटर - अरे भाई हरीश! आपने याद ही नहीं दिलाया इतना समय हो गया है।

मैनेजर- कोई बात नहीं सर, आप बैठ सकते हैं देर तक।

ऑडिटर - अरे नहीं भाई इतनी देर हो गई है और रास्ता भी काफी खराब है मुझे बहुत तकलीफ होगी कल से समय से चल पड़ेंगे।

रमेश बाबू - खराब रास्ता..कौन सा रास्ता?...मनोज कहां से ले आया?

(मैनेजर स्थिति भाप लेता है और कहता है अरे रमेश बाबू वह पक्की सड़क पर पेच वर्क चल रहा है।)

रमेश बाबू - अच्छा कब से ?

मैनेजर - कल से।

(सारी स्थिति नियंत्रण में आ जाती है)

ऑडिटर - तो चलो जी, आज का काम तो संपन्न हो गया मेरा।

मैनेजर- पाटिल साहब! आपका तो घर यहां से ज्यादा दूर नहीं है वीकेंड वही मनाइएगा!

ऑडिटर - अरे नहीं हरीश बाबू, बुधवार को ऑडिट एनीहाउ खत्म करना है। गुरुवार को हेड ऑफिस में कुछ काम है।

(पूरे ऑफिस में उमंग की लहर छा जाती है पर कोई जताता नहीं है)

मैनेजर- तो पाटिल साहब, घर कब जाइएगा?

ऑडिटर- हरीश बाबू क्या करें, अब घर जाकर?

मैनेजर - क्यों सर ?

ऑडिटर - कोई नहीं बचा घर में अब, बिटिया की शादी हो गई, पत्नी कोरोना में चल बसी।

(फिर पूरे स्टाफ में सहानुभूति की लहर छा जाती है पर कोई जताता नहीं है)

मैनेजर- माफ कीजिएगा सर! मुझे इस बारे में तो पता नहीं चला।

ऑडिटर - कोई बात नहीं, मैं भी स्वीकार नहीं कर पा रहा इसलिए अपने घर से भाग रहा हूं।

(दार्शनिक सी मुस्कान लेकर ऑडिटर ब्रांच से बाहर हो लेता है। बाकी स्टाफ भी अपनी मोटरसाइकिलों की ओर बढ़ जाते हैं)

मनोज (मैनेजर से) - सर, राजू फोन नहीं उठा रहा क्या करें?

मैनेजर- एक काम करो, मेरी गाड़ी से पाटिल साहब को छोड़ दो। मैं सतीश के साथ चला जाता हूं और हाँ, साब का इंतजाम लग्जरी रूम में कर देना और पक्के रास्ते से ले जाओ पेच वर्क हो चुका होगा!

मनोज - जी सर !

ऑडिटर - गिरा मत देना भाई, मुझे अभी कुछ बसंत और देखने है और बैंक को मेरी अभी भी बहुत जरूरत है हा हा हा ....।

(इस बार सब हंस देते हैं हा हा हा ....)

- ग्राहक सेवा प्रतिनिधि

शाखा सीहोर, मध्यप्रदेश

नराकास पुरस्कार

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), कोलकाता द्वारा आयोजित राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता वित्तीय वर्ष 2023-24 में बैंक के आंचलिक कार्यालय कोलकाता को प्रशासनिक कार्यालय श्रेणी में प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया गया। नराकास की छमाही बैठक में नराकास अध्यक्ष से यह पुरस्कार सहायक महाप्रबंधक श्री अमिताभ तालुकदार एवं राजभाषा अधिकारी श्री रवि यादव ने प्राप्त किया।

प्रवीण कुमार खेमका

जीवन-चक्र

(लघु-कथा)

बारिश के मौसम की वो सुबह अलबत्ता बेहद ख़ूबसूरत थी, पलकों से नींद ओझल हुई नहीं कि आँखें खिड़की के बाहर टकटकी लगाए बैठ गई। सहसा मेरी नजर आँगन में बैठे कुछ कौवों पर गई। यूँ तो मेरे घर के आँगन में चिड़ियों का ही दबदबा रहता है पर कभी-कभार मोर या फिर दूसरे पक्षी भी आ जातें हैं। मेरी दादी आंगन में ही मिट्टी के दो मर्तबानों मे पानी और दाना रखती थी शायद इसीलिए इन परिंदों और मेरी दादी की पक्की दोस्ती हो गई थी लेकिन आज कौवों की मौजूदगी ने मेरी उत्सुकता को थोड़ा बढ़ा दिया। गौर से देखने पर सारा माजरा समझ आ गया, जो कीट-पतंग रात भर घर की मुंडेर पर जलते बिजली के बल्ब के इर्द-गिर्द जश्न मना रहे थे वो सुबह होते ही इन कौवों की दावत बन गए। यूँ तो इनके प्रति मेरी कोई हमदर्दी नहीं थी लेकिन मेरा मन इस सोच में डूब गया कि किसी जीव का जीवन-काल भला इतना छोटा भी कैसे हो सकता है? शाम से पहले जिस पतंगे के पंख भी नहीं निकले थे वो रात-भर में अपने जीवन की सारी अवस्थाओं को पार करते हुए भोर का उजाला देखे बैगैर ही अगली पीढ़ी का लार्वा छोड़ कर चले गए।

मेरा मन भीतर से कचोट सा रहा था कि क्या किसी भी जीव के लिए जीवन यात्रा का इतना सा समय काफी है? हम मनुष्य तो औसतन 75 साल की आयु तक जीते है किंतु वह भी कितनी कम महसूस होती है। इस जीवन यात्रा में जो कार्य करना तय करते हैं वो ज्यादातर तो रह ही जाते है, कुछ आरंभ नहीं हो पाते तो कुछ परिणीति तक नहीं पहुंच पाते। इतना लंबा जीवन काल होते हुए भी हमारी लालसा और कार्य समाप्त नहीं हो पाते तो औसतन एक या दो दिन की जीवन अवधि वाले जीवों की गति क्या होगी?

मेरा मन एक अजीब सी उधेड़-बुन में पड़ गया। क्या जीवन और समय में कोई अंतःसंबंध है? अगर है तो अलग-अलग तरह के जीवों का जीवन-चक्र अलग-अलग समयावधि का क्यूँ? अगर नहीं तो जीवन पर समय की बाध्यता क्यूँ? मेरा मन एक के बाद एक उठने वाले इन सवालों से घिरने लगा।

सवालों के अंतर्द्वंद्व से उलझता हुआ मैं आंगन में बैठी मेरी दादी माँ के पास आकर बैठ गया। हमेशा की तरह यहाँ भी दादी माँ के पास जीवन का लंबा अनुभव था। जीवन के उतार-चढ़ाव को उन्होंने समीपता से देखा होगा। सवालों के चक्रव्यूह को यदि कोई भेद सकता था तो घर में दादी माँ ही सबसे उपयुक्त थीं। वो किसी पूजा की तैयारी में व्यस्त थी। दीवार पर कुछ सांपनुमा आकृति के मांडने बने थे और थाली में एक रस्सी को साँप के जैसे बैठा रखा था। इससे साफ़ पता चल रहा था कि उस दिन नाग-पंचमी थी और वो उसी की तैयारी में व्यस्त थीं।

मैंने एकाएक ही पूछा "साँप की आयु कितनी होती है?" दादी माँ ने कहा "हर साँप की आयु अलग-अलग होती है कुछ तो 8-10 साल की आयु तक जीते है तो वही कुछ 100 वर्ष की आयु तक भी जीते है।" उनकी इस बात को सुनकर मैंने और अधिक जिज्ञासा से पूछा "एक ही तरह के जीव की आयु में इतना अंतर क्यों? थोड़ा-बहुत अंतर तो हो सकता है लेकिन अंतर तो विशाल है।"

दादी ने हँसकर जवाब दिया "अंतर कहाँ है? 100 वर्ष की आयु वाला भी अपने पूरे जीवन में उतना ही करता है जितना 10 की आयु वाला करता है।" कुछ सामान्य सी लगने वाली इन पंक्तियों ने मानो कोई जादू-सा कर दिया। ऐसा लग रहा था जैसे सवालों के गरम बारूद पर ठंडी रेत सी बिछ गयी हो। हर सवाल जो उलझा रहा था मानो वो अब ख़ुद-ब-ख़ुद ही सुलझता जा रहा था। दादी के इन सामान्य से शब्दों में बड़ी गहरी बात थी। भौतिक रूप से जीवन पूर्ण तब कहलाता है जब इसकी समस्त अवस्थाओं को जी लिया जाए। यदि कोई जीव जिसका जीवनकाल सामान्य रूप से 10 वर्ष का ही होता है तो वह अपने संपूर्ण जीवन में उन्हीं अवस्थाओं को जीता है जो दूसरा जीव 100 वर्ष के जीवन में जीता है। संक्षेप में कहूं तो जीवन-चक्र की आयु अधिक या कम नहीं होती, यह महज सापेक्षिक दृष्टिकोण है।

जीवन चक्र स्वयं के स्तर पर संपूर्ण लेकिन जीव के आधार पर बहुत भिन्न होता है और इतनी भिन्नता होते हुए भी सभी एक ही विषय का पालन करते हैं। जीवन चक्र जैविक परिवर्तनों का अनुक्रम है जो जन्म से लेकर जीवन की अलग-अलग अवस्थाओं से होते हुए जीव की मृत्यु के साथ समाप्त होते हैं। जीनव-चक्र के अनुसार जीवन में बदलाव का चरण भावनात्मक या बौद्धिक हो सकते हैं और जीव के अनुसार उनमें अपनी-अपनी चुनौतियां होती है। किसी जीव का जीनव-चक्र, प्रकृति में प्रत्यक्ष होता है तो किसी का अप्रत्यक्ष, इन सब बातों के होते हुए भी सभी जीव, प्रकृति के लिए महत्पूर्ण होते हैं। सभी प्रकार के जीवन चक्रों में निश्चित विकास, परिपक्वता और पूर्णता का चरण होता है। अप्रत्याशित घटनाओं में यह अपवाद हो सकता है। असल में प्रकृति ने जितनी आयु जिस प्राणी के लिए तय की है वह बिलकुल ठीक है क्योंकि जीवन का छोटा या बड़ा होना तुलना करने योग्य नहीं है अपितु इसका पूर्ण होना आवश्यक है।

सवालों के चक्रव्यूह से बाहर निकलकर अब मैं शांति का अनुभव कर रहा था। साथ ही मेरे लिए अनुपयोगी लगने वाले इस छोटे से जीव से जीवन का इतना गूढ़ ज्ञान पाकर प्रकृति के प्रति मैं कृतज्ञ हो चुका था। इन सब बातों के बीच दादी ने अपनी पूजा की तैयारी कर ली थी और मुझे उनके इस कार्य के लिए कुछ समान लाने के लिए बाजार जाने का निर्देश मिला था।

-प्रबंधक
आंचलिक कार्यालय जयपुर

रचनाकारों से निवेदन

रचनाकारों से निवेदन है कि बैंक के प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग द्वारा प्रकाशित की जा रही तिमाही हिंदी गृह-पत्रिका "राजभाषा अंकुर" में प्रकाशन हेतु लेख भेजते समय लेख के अंत में अपना नाम, शाखा/ कार्यालय का पता, मोबाइल नंबर तथा अपना बैंक खाता संख्या व आईएफएससी कोड अवश्य लिखें। इसके साथ ही लेख के संबंध में मौलिकता प्रमाण-पत्र और अपना फ़ोटो भी उपलब्ध कराएं। सेवानिवृत्त स्टाफ सदस्य उपरोक्त के अतिरिक्त अपने घर का पता तथा स्थायी खाता संख्या (पैन नंबर) का भी उल्लेख करें।

-मुख्य संपादक

अमरिंदर सिंह

राजभाषा हिंदी और फिनटेक

हिंदी, भारत की राजभाषा है और यह देश के बड़े हिस्से में बोली और समझी जाती है। तकनीकी उन्नति के इस युग में कई क्षेत्रों में हिंदी का प्रयोग बढ़ा है। विशेष रूप से फिनटेक क्षेत्र में हिंदी का महत्व और प्रभाव धीरे-धीरे बढ़ रहा है। फिनटेक (वित्तीय तकनीक) एक ऐसा क्षेत्र है जो वित्तीय सेवाओं को तकनीकी समाधानों के माध्यम से आसान और अधिक सुलभ बनाने पर केंद्रित है। इसके साथ ही यह देश के विभिन्न क्षेत्रों और समुदायों को वित्तीय सेवाओं से जोड़ने का काम कर रहा है। जब हिंदी भाषा और फिनटेक एक साथ आते हैं तो यह न केवल उपयोगकर्ताओं के लिए सेवाओं को सरल बनाता है बल्कि देश की वित्तीय साक्षरता को भी बढ़ाने में सहायक साबित होता है।

हिंदी, भारत की राजभाषा होने के साथ-साथ एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक धरोहर भी है। यह 43% से अधिक भारतीयों की मातृभाषा है तथा उत्तरी और मध्य भारत के अधिकांश क्षेत्रों में प्रमुख रूप से बोली जाती है। डिजिटल युग में हिंदी भाषा की पहुंच व्यापक होती जा रही है जो अब सिर्फ साहित्यिक या सांस्कृतिक संवाद का साधन नहीं है बल्कि व्यावसायिक, शैक्षणिक और वित्तीय क्षेत्रों में भी अपनी पहचान बना रही है। इंटरनेट और डिजिटल साधनों की उपलब्धता ने हिंदी को और भी अधिक सुलभ बना दिया है जिससे इसके उपयोगकर्ताओं की संख्या में भी तेजी से वृद्धि हो रही है। भारत में जब फिनटेक उद्योग की बात होती है तो यह देखा गया है कि अधिकांश ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में ऐसे लोग हैं जो अंग्रेजी भाषा में असुविधा महसूस करते हैं लेकिन हिंदी भाषा से परिचित होते हैं। यह एक ऐसा बड़ा जनसमूह है जिसे फिनटेक सेवाओं के माध्यम से वित्तीय सेवाओं में सम्मिलित किया जा सकता है। इसलिए, हिंदी भाषा और फिनटेक के बीच का संबंध उस सेतु की तरह है जो

भारत की बहुसंख्यक आबादी को डिजिटल और वित्तीय सेवाओं की मुख्यधारा में ला सकता है।

फिनटेक, एक ऐसी अवधारणा है जिसमें वित्तीय सेवाओं और प्रौद्योगिकी का मेल होता है। यह इंटरनेट, मोबाइल तकनीक, ब्लॉकचेन और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसी आधुनिक तकनीकों के उपयोग से वित्तीय सेवाओं को अधिक दक्ष, सुरक्षित और सुलभ बनाता है। बैंकिंग, बीमा, निवेश, ऋण, भुगतान, धन प्रबंधन और यहां तक कि क्राउडफंडिंग जैसी वित्तीय सेवाओं में भी फिनटेक ने क्रांति ला दी है। यह परंपरागत वित्तीय संस्थानों के कामकाज को नया स्वरूप देता है और ग्राहकों को डिजिटल माध्यमों से वित्तीय सेवाओं का लाभ उठाने का अवसर प्रदान करता है।

भारत में फिनटेक का तेजी से विकास हुआ है, विशेषकर डिजिटल पेमेंट्स और मोबाइल बैंकिंग के क्षेत्र में। पेटीएम, फोन-पे, गूगल-पे और भीम जैसे एप्लिकेशन्स ने लाखों लोगों को वित्तीय लेन-देन की सुविधाएं दी हैं। इसके अतिरिक्त, रिज़र्व बैंक ऑफ इंडिया और सरकार द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न वित्तीय समावेशन कार्यक्रमों ने

भी फिनटेक के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारत में, वित्तीय समावेशन की चुनौती विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक है जहाँ लोग परंपरागत बैंकिंग सुविधाओं का कम उपयोग करते हैं। यहाँ फिनटेक ने एक बड़ा अंतर पैदा किया है।

भारत में बड़ी संख्या में लोग हिंदी बोलते और समझते हैं। जब कोई नई तकनीकी प्लेटफॉर्म या सेवा लॉन्च की जाती है तो भाषा एक प्रमुख भूमिका निभाती है। आज भी ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में अंग्रेजी की समझ सीमित है। इस परिप्रेक्ष्य में अगर फिनटेक सेवाओं को केवल अंग्रेजी में प्रस्तुत किया जाता है तो इसका बड़ा वर्ग इस सुविधा से वंचित रह सकता है। यही कारण है कि कई फिनटेक कंपनियां और प्लेटफ़ॉर्म अब हिंदी में अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। फिनटेक सेवाओं को हिंदी भाषा में उपलब्ध कराने से निम्नलिखित लाभ हो सकते हैं :

- **अधिक उपयोगकर्ता जुड़ाव :** हिंदी भाषी क्षेत्रों में लोग ज्यादा आत्मविश्वास के साथ फिनटेक सेवाओं का उपयोग कर सकते हैं।
- **वित्तीय साक्षरता में वृद्धि :** हिंदी में सरल और सुलभ भाषा में जानकारी प्रदान करने से लोग वित्तीय उत्पादों और सेवाओं को बेहतर ढंग से समझ पाएंगे।
- **सर्विस की सुलभता :** फिनटेक सेवाएं, ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों तक अधिक आसानी से पहुंच सकती हैं जहाँ हिंदी का व्यापक प्रयोग होता है।

भारत में तेजी से डिजिटलीकरण हो रहा है और वित्तीय सेवाएं अब मोबाइल और अन्य डिजिटल माध्यमों के माध्यम से उपलब्ध हो रही हैं। सरकार भी 'डिजिटल इंडिया' के तहत अधिक से अधिक लोगों को डिजिटल भुगतान और बैंकिंग सेवाओं से जोड़ने के प्रयास कर रही है। हिंदी भाषा का उपयोग फिनटेक प्लेटफॉर्म्स पर इन सेवाओं को लोगों तक पहुंचाने का एक सशक्त माध्यम बनता जा रहा है। यह देश के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है क्योंकि इससे लोगों को वित्तीय सेवाओं के प्रति जागरूकता मिलती है और वे आसानी से इन सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं।

फिनटेक उद्योग में हिंदी का उपयोग उपभोक्ता के अनुभव को बेहतर बनाने और वित्तीय समावेशन को बढ़ाने में एक महत्वपूर्ण उपकरण साबित हो रहा है। जैसे-जैसे भारत में इंटरनेट और स्मार्टफोन की पहुंच बढ़ रही है वैसे-वैसे डिजिटल वित्तीय सेवाओं की मांग भी बढ़ रही है। कई फिनटेक कंपनियों ने इसे समझते हुए अपनी ऐप्स और वेबसाइट्स को हिंदी भाषा में उपलब्ध कराना शुरू कर दिया है। इसका एक प्रमुख उदाहरण 'पेटीएम' है जिसने अपनी सेवाओं को हिंदी में प्रस्तुत किया है। इसके अलावा गूगल-पे, फोन-पे और अन्य डिजिटल पेमेंट प्लेटफॉर्म भी हिंदी भाषा में सेवाएं उपलब्ध कराते हैं।

यह कदम सिर्फ तकनीकी दृष्टिकोण से ही नहीं, बल्कि उपभोक्ता संतुष्टि और समावेशन के दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है। यह सुनिश्चित करता है कि कोई भी व्यक्ति भाषा की बाधा के कारण वित्तीय सेवाओं से वंचित न रहे। भारत के ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में वित्तीय सेवाओं की पहुंच अभी भी एक चुनौती बनी हुई है। इस स्थिति में फिनटेक प्लेटफ़ॉर्म्स और मोबाइल बैंकिंग सेवाओं की भूमिका अहम है लेकिन यहाँ सबसे बड़ी चुनौती यह है कि इन क्षेत्रों में लोग मुख्य रूप से हिंदी या स्थानीय भाषाओं का ही प्रयोग करते हैं। ऐसे में हिंदी भाषा में वित्तीय सेवाओं को प्रस्तुत करना महत्वपूर्ण हो जाता है।

ग्रामीण इलाकों में कई लोग अभी भी बैंकों तक नहीं पहुंच पाते और न ही उनके पास वित्तीय जानकारी होती है। फिनटेक कंपनियों के लिए यह आवश्यक हो गया है कि वे अपने प्लेटफॉर्म्स को हिंदी भाषा में इस तरह से प्रस्तुत करें जिससे लोग न केवल उसे समझें बल्कि उसका उपयोग भी कर सकें। उदाहरण के लिए यदि कोई किसान अपने मोबाइल फोन के माध्यम से लोन लेने की प्रक्रिया को हिंदी में समझ सकता है तो वह उस सेवा का अधिक से अधिक उपयोग करेगा।

फिनटेक में हिंदी भाषा के समक्ष चुनौतियाँ : हालांकि फिनटेक में हिंदी का उपयोग बढ़ रहा है लेकिन इसके सामने कुछ चुनौतियाँ भी हैं जिन्हें इस प्रकार से सूचीबद्ध किया जा सकता है :

- **तकनीकी शब्दावली का अभाव :** वित्तीय और तकनीकी शब्दावली का हिंदी में अनुवाद करना कभी-कभी मुश्किल हो जाता है। कई तकनीकी शब्दों का सटीक हिंदी अनुवाद उपलब्ध नहीं होता जिसके कारण उपयोगकर्ता को समझने में कठिनाई हो सकती है।
- **सुसंगतता की कमी :** हिंदी भाषा के विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न रूप होते हैं। मसलन उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान आदि

राज्यों में हिंदी के अलग-अलग रूप देखने को मिलते हैं। इससे फिनटेक प्लेटफॉर्म्स को एक सुसंगत भाषा का चयन करने में कठिनाई हो सकती है।

- **डिजिटल साक्षरता :** हिंदी भाषी क्षेत्रों में डिजिटल साक्षरता अभी भी एक चुनौती है। भले ही फिनटेक सेवाएं हिंदी में उपलब्ध हों लेकिन जब तक लोगों को तकनीक का सही उपयोग करना नहीं आता, तब तक इन सेवाओं का पूर्ण लाभ नहीं उठाया जा सकता।

समाधान और संभावनाएं - फिनटेक उद्योग और सरकार मिलकर कई तरीकों से हिंदी भाषा के माध्यम से वित्तीय सेवाओं का विस्तार कर सकते हैं। इनमें प्रमुख हैं -

लोकलाइजेशन और अनुकूलन : फिनटेक प्लेटफॉर्म्स को हिंदी भाषा के विभिन्न संस्करणों में अनुकूलित किया जा सकता है ताकि क्षेत्रीय विविधताओं का सम्मान किया जा सके। इसके साथ ही, उपयोगकर्ता इंटरफेस और अनुभव को सरल और स्पष्ट बनाया जा सकता है ताकि उपभोक्ता सहजता से इसका उपयोग कर सकें।

वित्तीय साक्षरता अभियान : सरकार और फिनटेक कंपनियाँ मिलकर हिंदी भाषा में वित्तीय साक्षरता अभियान चला सकती हैं। इसके माध्यम से ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में लोगों को फिनटेक सेवाओं के लाभ और उपयोग के बारे में जागरूक किया जा सकता है। डिजिटल और प्रिंट मीडिया का उपयोग करके लोगों को हिंदी में शिक्षित करना और उन्हें फिनटेक सेवाओं के उपयोग के लिए प्रेरित करना एक कारगर कदम हो सकता है।

उपभोक्ता सहायता और सेवा : हिंदी भाषा में उपभोक्ता सहायता सेवाओं का विस्तार करना एक महत्वपूर्ण कदम हो सकता है। यह न केवल लोगों को अपनी समस्याओं का समाधान प्राप्त करने में मदद करेगा बल्कि उन्हें फिनटेक सेवाओं के प्रति अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण भी देगा।

जैसे-जैसे भारत में डिजिटल सेवाओं का विस्तार हो रहा है वैसे-वैसे हिंदी भाषा में फिनटेक सेवाओं का उपयोग भी बढ़ता जा रहा है। फिनटेक कंपनियों को अब यह समझने की आवश्यकता है कि अगर वे देश के हर कोने में अपनी सेवाओं को पहुंचाना चाहते हैं तो उन्हें हिंदी भाषा का अधिक से अधिक प्रयोग करना होगा। आने वाले समय में जब हिंदी भाषी लोग अधिक जागरूक और तकनीकी रूप से सशक्त होंगे, तब फिनटेक सेवाओं का प्रभावी उपयोग देश की आर्थिक प्रगति में अहम योगदान देगा। इसके साथ ही, सरकार और निजी क्षेत्र को भी इस दिशा में मिलकर काम करना होगा ताकि फिनटेक में हिंदी भाषा का उपयोग और अधिक व्यापक रूप से हो सके। सरकार के डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के तहत कई प्रयास किए जा रहे हैं ताकि देश के हर व्यक्ति को डिजिटल रूप से सशक्त बनाया जा सके। फिनटेक कंपनियों को भी इन सरकारी योजनाओं का लाभ उठाकर अपनी सेवाओं को हिंदी भाषा में विस्तारित करना चाहिए।

हिंदी भाषा और फिनटेक के बीच का संबंध भारतीय समाज के वित्तीय और तकनीकी विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जैसे-जैसे फिनटेक सेवाओं का विस्तार हो रहा है वैसे-वैसे हिंदी में इन सेवाओं की उपलब्धता का महत्व भी बढ़ रहा है। भाषा की सरलता और सहजता से उपयोगकर्ताओं को न केवल वित्तीय सेवाओं का लाभ मिलता है बल्कि वे वित्तीय निर्णय भी अधिक आत्मविश्वास के साथ ले पाते हैं। फिनटेक और हिंदी का यह समन्वय भविष्य में भारत के डिजिटल और वित्तीय समावेशन में अहम भूमिका निभाएगा।

-प्रबंधक
आंचलिक कार्यालय पंचकूला

प्रधान कार्यालय में प्रकाश पर्व

सिख धर्म के संस्थापक श्री गुरु नानक देव जी के 555 वें प्रकाश पर्व के अवसर पर बैंक के राजेन्द्र प्लेस स्थित परिसर में 18 नवंबर, 2024 को शबद कीर्तन, अरदास तथा लंगर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री स्वरूप कुमार साहा तथा मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री अरुण कुमार अग्रवाल विशेष रूप से उपस्थित रहे। उल्लेखनीय है कि बैंक, अपनी सांस्कृतिक विरासत को समृद्ध करने के उद्देश्य से प्रत्येक वर्ष गुरूपर्व का आयोजन अत्यंत हर्षोल्लास के साथ करता है।

੧ੴ ਸ੍ਰੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫ਼ਤਹਿ

पंजाब एण्ड सिंध बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)

पी.एस.बी

Punjab & Sind Bank
(A Govt. of India Undertaking)

जहाँ सेवा ही जीवन–ध्येय है

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

PSB UniC
You & I Connected

आकर्षक ऑफर्स
के साथ
इस नव वर्ष का आनंद लें।

2025

स्केन करें और लाभ उठाएं
स्वीकृति केवल 30 मिनट में#

पीएसबी
ई-अपना घर
मिनटों में ऋण, जीवर भर के लिए घर

सुविधा का लाभ प्राप्त करने के लिए यहाँ स्केन करें।

पीएसबी
ई-अपना वाहन
गति और सुविधा का मेल

सुविधा का लाभ प्राप्त करने के लिए यहाँ स्केन करें।

#सत्यापन, विधिक/मूल्यांकन रिपोर्ट के अधीन, जहां लागू हो।

विजिट करें।
https://digiloans.psb.co.in/psb/homeloan

इस नंबर पर मिस्ड कॉल दें।
8879806866

विजिट करें।
https://digiloans.psb.co.in/psb/vehicleloan

इस नंबर पर मिस्ड कॉल दें।
8879840089

कभी भी, कहीं भी!!
अधिक जानकारी के लिए, हमारी निकटतम शाखा से संपर्क करें
देखें: https://punjabandsindbank.co.in

*नियम व शर्तें लागू

ईमेल: ho.customerexcellence@psb.co.in
1800 419 8300 (टोल फ्री) | हमें फॉलो करें @PSBIndOfficial